नैतिक शिक्षा

ग्यारहवीं कक्षा के लिए

वन्दे मातरम्

वन्दे मातरम्।

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्

शस्यश्यामलां मातरम्

वन्दे मातरम्

शुभ्रज्योत्स्ना पुलकितयामिनीम्

फुल्लकुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्

सुहासिनीं सुमधुरभाषिणीम्

सुखदां वरदां मातरम्

वन्दे मातरम्

आमुख

आज विश्व में विज्ञान बहुत तीव्रगति से प्रगति कर रहा है। वैज्ञानिक व औद्योगिक क्रान्तियों ने धर्म व मोक्ष की जगह अर्थ और काम पुरुषार्थ को इतना प्रबल बना दिया है कि परम्परागत जीवन मूल्यों का निरन्तर पराभव होता जा रहा है। भोगवादी संस्कृति उत्तम जीवन मूल्यों को नष्ट करने पर तुली है, जिससे लोग नैतिक मूल्यों की उपेक्षा करके स्वार्थसिद्धि में प्रवृत्त हो रहे हैं। सम्पूर्ण राष्ट्र इस विभीषिका से त्रस्त है और संशय के धरातल पर खड़ा है। वर्तमान शताब्दी एवं भविष्य के लिए यह एक बड़ी चुनौती है।

शिक्षा अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाती है और हमारी दृष्टि को दिव्य बनाती है। शिक्षा ही एक ऐसा अनूठा माध्यम है, जिससे छात्र–जीवन में मूल्यों की स्थापना की जा सकती है। यह शिक्षा का बुनियादी दायित्व है कि वह जीवन को त्रिकालसम्मत मूल्यों पर आधारित करे और ऐसी शक्तियों पर अंकुश लगाए, जो इन शाश्वत व चिरन्तन मूल्यों का ह्रास करती हैं। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है– छात्र का चारित्रिक विकास। यह तभी सम्भव है, जब शिक्षा को नैतिकता से जोड़ा जाए। इसके लिए 'नैतिक मूल्य' आधारभूत सामग्री है। इससे जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों का विकास होगा तथा भौतिकवाद के भटकाव से समाज को बचाया जा सकेगा। साथ ही अनैतिक व अमानवीय प्रवृत्तियों पर अंकुश भी लग सकेगा, करुणा व दया के भाव प्रस्फुटित होंगे तथा मन की संवेदना का विस्तार होगा। नैतिक शिक्षा से अभिप्राय उस शिक्षा से है, जो हमारे जीवन को प्रशस्त बनाती है और हमें संस्कृति से जोड़े रखती है। शिक्षा में नैतिकता का समावेश होने पर ही समाज में व्याप्त चारित्रिक पतन से मुक्ति मिल सकती है।

नैतिक शिक्षा का परीक्षण पुस्तकों में न रहकर जीवन के आचरण में होता है। इन जीवन मूल्यों को धारण करने का उपयुक्त समय विद्यार्थी जीवन ही है। इसको ध्यान में रखते हुए नैतिक शिक्षा पर आधारित विषयों का संकलन इस पुस्तक में किया गया है। नैतिकता मानवता की साँझी धरोहर है। नैतिक शिक्षा में विश्व का सारा चिन्तन व दर्शन समाया हुआ है। इसका सीधा सम्बन्ध व्यवहार दर्शन से है। नैतिकता का निवास शब्दों में कम और व्यवहार में अधिक होता है। सच्चे आचरण से जुड़ी नैतिक शिक्षा छद्म नहीं सिखाती है। इस पुस्तक में सूक्तियों, प्रेरक प्रसंगों आदि के माध्यम से नैतिक शिक्षा को व्यावहारिक जीवन में आकार देने का प्रयास किया गया है, जिससे हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की परम्पराएँ कायम रहेंगी और निरन्तरता व बदलाव को भी गति मिलेगी।

आशा है इस पुस्तक में आए उच्च नैतिक मूल्य विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए नेतृत्व एवं अनुयायित्व की प्रवृत्तियों का विकास कर सकेंगे। साथ ही भारत की सार्वभौमिक सांस्कृतिक धरोहर को उन तक पहुँचा सकेंगे। इसे पढ़कर वे देशभक्त, संस्कारी व प्रतिभाशाली बनेंगे। हम उन सभी लेखकों व सुधीजनों के आभारी हैं, जिन्होंने अमूल्य योगदान देकर इस पुस्तक को अपनी रचनाओं से सुशोभित किया है। सुधी पाठकों के विचार अवश्य ही इस दिशा में हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

केशनी आनन्द अरोड़ा
अतिरिक्त मुख्य सचिव, विद्यालय शिक्षा
हरियाणा, चण्डीगढ़

प्राक्कथन

आज समाज में मानसिक तनाव एवं पारिवारिक, सामाजिक व साम्प्रदायिक रूप से विलगाव दिखाई पड़ रहा है। इस विलगाव का एक कारण यह है कि हमारे विद्यार्थियों में सुसंस्कारों का अभाव होने के कारण वे नैतिक आचरण से दूर हो रहे हैं। बच्चे पारिवरिक समरसता के प्राण होते हैं। आज समाज में पारिवारिक सौहार्द व सामाजिक समरसता का अभाव अभिभावकों, प्रशासकों, नेताओं एवं सरकार के सामने सबसे बड़ी समस्या है क्योंकि वर्तमान शिक्षा विद्यार्थियों में आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव, मातृदेवो भव, पितृदेवो भव व सत्यं वद जैसे आदर्श सिद्धान्तों के भावों का संचार नहीं कर पा रही है।

इस परिस्थिति में विगत वर्षों से अभिभावक बहुत ही चिन्ताग्रस्त हैं। उनकी चिन्ता को ध्यान में रखते हुए हरियाणा सरकार के शिक्षा विभाग ने नैतिक शिक्षा विषय को पाठ्यक्रम का अंग बनाने का निश्चय किया। इसकी अनुपालना में राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद, हरियाणा, गुरुग्राम द्वारा विषय विशेषज्ञों की सहायता से नैतिक शिक्षा की पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया है।

नैतिक शिक्षा के अध्ययन हेतु कक्षावार अध्यापन की व्यवस्था होगी। सप्ताह में प्रतिदिन प्रार्थना–सभा के समय नैतिक शिक्षा में संकलित पाठों पर आधारित विद्यार्थियों/शिक्षकों द्वारा विचार व्यक्त किए जाएँगे। व्यक्त किए गए नैतिक मूल्यों को आचरण में लाना विभाग का प्रमुख उद्देश्य है। शिक्षा में नैतिकता के समायोजन हेतु विद्यार्थियों द्वारा नैतिकता पूर्ण आचरण का मूल्यांकन प्रणाली में अंक निर्धारित करना महत्त्वपूर्ण होगा। नैतिक शिक्षा की बोर्ड परीक्षा का दायित्व हरियाणा शिक्षा बोर्ड भिवानी का होगा। नैतिक शिक्षा विषय को पढ़ाने का दायित्व विशेषरूप से भाषा के आचार्यो/शिक्षकों का होगा। यदि इन विषयों के शिक्षको का कार्यभार अधिक हो तो अन्य विषय के अध्यापक नैतिक शिक्षा का अध्यापन कार्य करेंगे।

यह भी ध्यातव्य है कि प्रत्येक विषय के शिक्षक को यह पुस्तक उपलब्ध करायी जाए तथा यह परामर्श दिया जाए कि वे अपने विषय के अध्यापन के समय प्रसंगानुसार नैतिक मूल्यों का उपस्थापन कर विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों को जानने व उन्हें अपने आचरण में लाने के लिए प्रेरित करें।

आशा है कि सभी आचार्य/ शिक्षक नैतिक शिक्षा पुस्तक के माध्यम से मूल्यपरक सिद्धान्तों को मनोयोगपूर्वक सुव्यवस्थित प्रस्तुति के माध्यम से विद्यार्थियों तक पहुँचाकर समाज के समुन्नयन हेतु योगदान देकर अपने महत्त्वपूर्ण दायित्व का निर्वहन करेंगे।

कक्षा 11वीं एवं 12वीं की पाठ्यपुस्तकों में 19–19 पाठों का समायोजन किया गया है। इन पाठों के माध्यम से ईशस्तुति, देशभक्त महिलाओं एवं पुरुषों के प्रेरक व्यक्तित्व, शाश्वत नैतिक मूल्य परक प्रसंग, जीवन मूल्य, प्रेरक कहानी, पर्यावरण एवं उल्लेखनीय व्यक्तित्वपरक पाठों के माध्यम से विद्यार्थी को नैतिक गुणों से सम्पन्न करने का मुख्य उद्देश्य रखा गया है।

इस पुस्तक के निर्माण में परमश्रद्धेय गीतामनीषी स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज, माननीय श्री दीनानाथ बत्रा, अध्यक्ष, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली, प्रो0 श्रीधर वासिष्ठ, पूर्वकुलपति, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठ (मानितविश्वविद्यालय) नई दिल्ली, प्रो0 चाँदकिरण सलूजा, सेवानिवृत्त आचार्य, केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली सहित समस्त पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के विद्वानों, चित्रकार फजरुददीन, टंकणकर्ता सुनील गोयल एवं हरीश कुमार के प्रति परिषद् आभार ज्ञापित करती हुई सुधी पाठकों से आवश्यक सुझावों का सादर सम्मान करने के लिए तत्पर है। आशा है कि यह पुस्तक विद्यार्थियों को संस्कारवान् बनाने में अत्यन्त उपयोगी होगी।

एम एल कौशिक

निदेशक

माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा, पंचकूला

पुस्तक–निर्माण–समिति

संरक्षक

श्रीमती केशनी आनन्द अरोड़ा, अतिरिक्त मुख्य सचिव, विद्यालय शिक्षा, हरियाणा, चण्डीगढ़।

श्री एम एल कौशिक, निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा, पंचकूला।

श्री धीरेन्द्र खड़गटा, सचिव, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी

मार्गदर्शन

श्रीमती स्नेहलता, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा, गुड़गाँव।

डॉ० किरणमयी, संयुक्त निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा, गुड़गाँव।

श्री रवीन्द्र फौगाट, अध्यक्ष, पा.पु.विभाग, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा, गुड़गाँव।

परामर्श

प्रो० श्रीधर वासिष्ठ, पूर्वकुलपति, श्रीलाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली।

प्रो० कृष्णचन्द्र त्रिपाठी, अध्यक्ष भाषा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।

प्रो० तेजपाल शर्मा, पूर्व आचार्य, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी ओडिशा

डॉ० मुहम्मद हनीफ खान, सहाचार्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली।

समन्वयक व सम्पादक

डॉ० श्रेयांश द्विवेदी, विषयविशेषज्ञ, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा, गुड़गाँव।

श्री ललित कुमार, विषयविशेषज्ञ, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा, गुड़गाँव।

लेखक मण्डल

श्री चन्द्रप्रकाश, सेवानिवृत्त मुख्याध्यापक, भिवानी।

डॉ० राजवन्ती, प्राध्यापिका संस्कृत, रा.क.व.मा.विद्यालय, भालौट, रोहतक।

श्री अशोक कुमार, प्राध्यापक संस्कृत, रा.व.मा.विद्यालय, कायला, भिवानी।

श्री करतारचन्द, प्राध्यापक संस्कृत, रा.व.मा.विद्यालय, दड़ौली, हिसार।

श्री अनिल कुमार, प्राध्यापक संस्कृत, रा.क.व.मा.विद्यालय, लांधड़ी, हिसार ।

श्री सुभाष कुमार, प्राध्यापक संस्कृत,रा.व.मा.विद्यालय, खडालवा, कैथल।

श्री सुनीलदत्त, प्राध्यापक संस्कृत, रा.व.मा.विद्यालय, कमालपुर, कैथल।

श्री बिजेन्द्र सिंह, प्राध्यापक संस्कृत, रा.व.मा.विद्यालय, कवी, पानीपत

डॉ० सुखदा, अध्यापिका संस्कृत, रा.क.उ.विद्यालय, चुलियाना, रोहतक।

श्रीमती सरला शर्मा, अध्यापिका हिन्दी, रा.व.मा.विद्यालय, दड़ौली, हिसार।

विषय-सूची

1.	सरस्वती वन्दना	7
2.	यम नियम	9
3.	सूक्ति सौरभ	12
4.	मानव धर्म	16
5.	योगः कर्मसु कौशलम्	18
6.	महारानी अहिल्याबाई होलकर	24
7.	सी.वी.रमन	26
8.	भगवान् महावीर	29
9.	वीर सावरकर	32
10.	वैदिक धर्म का स्वरूप	35
11.	प्रेरक दोहे	38
12.	क्षमा और शक्ति	40
13.	विश्वबन्धुत्व व मानवता	42
14.	अशफाक उल्ला खाँ	45
15.	बुद्धिमान् केंकड़ा	48
16.	छोटी–छोटी बातें	51
17.	डॉ0 ए.पी.जे.अब्दुल कलाम	55
18.	राष्ट्रभक्ति	57
19.	बुद्धि स्थिर एवं अच्छी रहे	61

पाठ 1 सरस्वती वन्दना

सारे संसार में माँ सरस्वती को विद्या की देवी के रूप मे पूजा जाता है। शिक्षा, ज्ञान व बुद्धिमत्ता की प्राप्ति हेतु माँ सरस्वती की उपासना विभिन्न प्रार्थनाओं द्वारा की जाती है। विद्यार्थी, संगीतकार, कलाकार, चिकित्सक व वैज्ञानिक आदि सभी ज्ञान प्राप्ति हेतु माँ सरस्वती की विशेष अनुकम्पा से जड़–बुद्धि भी विद्वान् होकर जगत् में प्रसिद्ध हो जाते हैं। अतः हम सभी को अपने–अपने क्षेत्र में ज्ञान की प्राप्ति के लिए माँ शारदा से वाणी रूपी आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए और जीवन की सार्थकता के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

या कुन्देन्दुतुषारहार धवला या शुभ्रवस्त्रावृता।
या वीणा वरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा।।

भावार्थ – जो विद्या की देवी भगवती कुन्द के फूल, चन्द्रमा, हिमराशि और मोती के हार की तरह धवल वर्ण की है, और श्वेत वस्त्र धारण करती है, जिसके हाथ में वीणादण्ड शोभायमान है, जिसने श्वेत कमल पर आसन ग्रहण किया है तथा ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर आदि देवताओं द्वारा जो सदा पूजी जाती है, वही सम्पूर्ण जड़ता और अज्ञान को दूर कर देने वाली माँ सरस्वती हमारी रक्षा करे।

शुक्लां ब्रह्मविचारसार परमाम् आद्यां जगद्व्यापिनीम् ।
वीणापुस्तकधारिणीम् अभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम् ।
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ।।

भावार्थ – शुक्ल वर्ण वाली, परब्रह्म के विषय में किए गए विचार के साररूप, आदि शक्ति, समस्त जगत् में विद्यमान हाथों में वीणा और पुस्तक धारण करने वाली, सभी प्रकार से अभय दान देने वाली, जड़ता रूपी अन्धकार को हरनेवाली, हाथ में स्फटिक पत्थर की माला धारण करनेवाली, पद्मासन पर विराजमान, बुद्धि प्रदान करने वाली और सर्वोच्च ऐश्वर्य से अलंकृत भगवती शारदा की मैं वन्दना करता हूँ।

पाठ 2 यम नियम

प्रण करता हूँ, प्रण पालन की शक्ति प्रभु मुझ को दे दो।
यम–नियम पालन करने की शक्ति प्रभु मुझ को दे दो।।

महर्षि पतंजलि ने जीवन को सार्थक बनाने के लिए योग अनिवार्य बताया है। योग एक विशिष्ट जीवन–पद्धति है, जिससे मनुष्य स्वस्थ, शान्त, सुखी, प्रसन्न एवं नीरोग रह सकता है। श्रीकृष्ण जी अर्जुन को उपदेश देते हुए कहते हैं– **''समत्वं योग उच्यते''**। हे अर्जुन! योग–युक्त होकर मोह छोड़कर ज्ञानपूर्वक कर्म करो और सफलता एवं असफलता में समभाव रखो। जिस प्रकार योगासन करने से शारीरिक स्वास्थ्य लाभ होता है, उसी प्रकार यम–नियम आदि का पालन करने से मानसिक एवं बौद्धिक लाभ प्राप्त होता है।

योग के आठ अंग हैं–

1. यम
2. नियम
3. आसन
4. प्राणायाम
5. प्रत्याहार
6. धारणा
7. ध्यान
8. समाधि

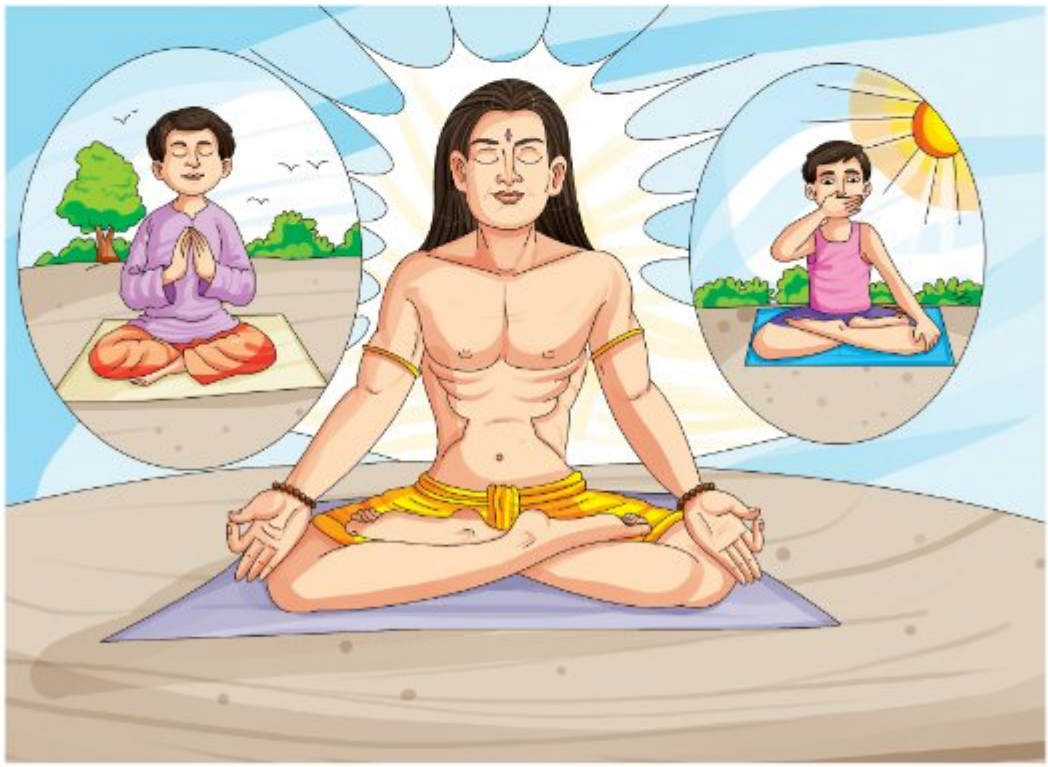

इसी कारण से इसे अष्टांग योग कहा जाता है। इन आठ अंगों में प्रथम दो अंग यम और नियम जीवन के पालन का मार्ग हैं। यह एक पद्धति है, जिससे जीवन का मार्ग अपने आप स्पष्ट दिखाई देता है। योगदर्शन में यम नामक अंग को निम्नलिखित सूत्र से स्पष्ट किया गया है–

"अहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहाः यमाः" यम पाँच होते हैं– अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह।

अहिंसा– हिंसा न करना। "अहिंसा परमो धर्मः" का सिद्धान्त जैन बौद्ध आदि सभी धर्मों में समानरूप से माना जाता है। मन, वचन और कर्म से किसी जीव के प्रति– हिंसा का भाव न रखना अहिंसा है। हमारे द्वारा अहिंसा भाव अपनाने से सभी जीव–जन्तु हमारे प्रति वैर भावना को त्याग देते हैं– योग शास्त्र में निम्नलिखित सूत्र में इसी बात की पुष्टि की गई है– "अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः"

सत्य– प्रत्यक्ष में देखा, सुना, पढ़ा व अनुमान किया गया कि जो ज्ञान मन में है, उसे वैसा ही वाणी से प्रकट करना और उसी को शरीर से आचरण में लाना सत्य कहलाता है। योगदर्शन मे कहा है– "सत्यप्रतिष्ठायां सर्वक्रियाफलाश्रयत्वम्" अर्थात् सभी क्रियाओं का फल सत्य पर आश्रित होता है। सत्य बोलने वाले व्यक्ति में कभी आत्मविश्वास की कमी नही हो सकती। आत्मविश्वास परिपूर्ण व्यक्ति जीवन में कभी असफल नहीं हो सकता। कहा जाता है कि "सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्"।

अस्तेय– चोरी न करना। मन, वचन और कर्म से किसी अन्य की वस्तु का उपभोग न करना। योगसूत्र के अनुसार – "अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम्" अर्थात् चोरी न करने वाले व्यक्ति को सभी मूल्यवान् वस्तुएँ उपलब्ध हो जाती हैं।

ब्रह्मचर्य – मन तथा इन्द्रियों पर संयम करके शारीरिक शक्तियों की रक्षा करना, वेदादि सत्य शास्त्रों को पढ़ना तथा ईश्वर की उपासना करना ही ब्रह्मचर्य है। पतंजलि ऋषि ने योगदर्शन में लिखा है– "ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः" अर्थात् मन, वचन और कर्म से ब्रह्मचर्य का पालन करने से सभी प्रकार का वीर्यलाभ अर्थात् बल प्राप्त होता है।

अपरिग्रह – तृष्णा का त्याग। हानिकारक एवं अनावश्यक वस्तुओं का संग्रह न करना।

घर सम्पत्ति भूमि धन आदि, जरूरत के अनुसार रहें।

जितना अधिक हो दान करूँ मैं , शक्ति भगवान मुझे दे दो।।

इन पाँचों यमों का पालन मनुष्य के जीवन को सहज सरल और उत्तम बनाता है।

योग का दूसरा अंग है नियम–

योगदर्शन में नियम अंग के विषय में निम्नलिखित सूत्र का उल्लेख है–

"शौचसन्तोषतपः स्वाध्याय ईश्वरप्रणिधानानि" इति नियमाः।

नियम पाँच होते हैं– शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान ।।

शौच – शुद्धि । शुद्धि दो प्रकार की होती है– बाह्यशुद्धि और आन्तरिकशुद्धि। शरीर, वस्त्र, पात्र, स्थान, खान–पान आदि को शुद्ध रखना बाह्य शुद्धि कहलाती है। विद्या, सत्संग, स्वाध्याय, सत्यभाषण आदि का मन, वचन और कर्म से पालन करना आन्तरिक शुद्धि है।

सन्तोष–मन, वचन और कर्म से पूर्ण पुरुषार्थ करने के पश्चात् जितना भी आनन्द, विद्या, बल, धन आदि फलरूप में प्राप्त हो, उतने से ही सन्तुष्ट रहना सन्तोष कहलाता है। योगदर्शन में कहा है–"सन्तोषादनुत्तमःसुख लाभः" अर्थात् सन्तोष से अनुपम सुख की प्राप्ति होती है।

तप – "द्वन्द्वसहनं तपः" अर्थात् द्वन्द्वों को सहन करना ही तप कहलाता है। धर्माचरणरूप उत्तम करने योग्य कर्मों को करते हुए भूख–प्यास, सर्दी–गर्मी, हानि–लाभ, मान–अपमान तथा भय–दुःख आदि द्वन्द्वों को धैर्य पूर्वक सहन करना ही तप है। इस प्रकार का आचरण करने वाले व्यक्ति ही वास्तव में तपस्वी कहलाने योग्य हैं।

स्वाध्याय – स्व–अध्ययन। वेद उपनिषद् तथा सत् शास्त्रों को पढ़ना तथा उनके द्वारा प्रतिपादित विषय का चिन्तन करना स्वाध्याय कहलाता है। मोक्ष प्राप्ति कराने वाले शास्त्रों को पढ़कर परमात्मा के मुख्य नाम "ओ३म्" तथा आत्मा, परमात्मा, ब्रह्म आदि गूढ़ विषयों का चिन्तन करना ही स्वाध्याय कहलाता है।

ईश्वर प्रणिधान– शरीर, बुद्धि, बल, धन आदि समस्त साधनों को ईश्वर प्रदत्त मानकर उनका प्रयोग मन, वाणी तथा शरीर से ईश्वर की प्राप्ति के लिए ही करना प्रणिधान कहलाता है। इसका सीधा अर्थ है कि ईश्वर का ध्यान करना, ईश्वर में मन लगाकर उसके गुणों और कृपा का चिन्तन करना।

जिस साधना के द्वारा आत्मा का परमात्मा से मिलन हो सकता है, उसे योग कहा जाता है। जीव की सबसे बड़ी सफलता ईश्वर की प्राप्ति कर लेना है। जीव छोटे से बड़ा बनने के लिए, अपूर्ण से पूर्ण होने के लिए, बन्धन से मुक्त होने के लिए अनन्तकाल से प्रयत्न करता आ रहा है। यह प्रयत्न योग द्वारा सफल हो सकता है। मानवमात्र के लिए कल्याणकारी योग को आज योगाचार्यों ने सभी देशों में योग की राह दिखाकर मनुष्यों को मन, वचन और कर्म से स्वस्थ रहने के लिए अनुपम वरदान दिया तथा भारत सरकार के प्रयास से वर्ष 2015 में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समस्त विश्व ने एकमत होकर 21 जून को "योग–दिवस" के रूप में मनाने का संकल्प लिया।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. योग के कितने अंग हैं ? उनके नाम लिखें।
2. योगदर्शन का लेखक कौन है ?
3. यम के कितने भेद हैं ? उनके नाम लिखें।
4. नियम के कितने भेद हैं ? उनके नाम लिखें।
5. सत्य किसे कहते हैं ?

भावात्मक प्रश्न

1. तप से क्या अभिप्राय है ?
2. योग–दिवस मनाने से विश्व में क्या प्रभाव पड़ेगा ?
3. शुद्धि में प्रकारों का वर्णन कीजिए।
4. स्वाध्याय किसे कहते हैं ?
5. तृष्णा का त्याग क्या कहलाता है?

क्रियात्मक

1. अध्यापक छात्रों को उदाहरण देकर समझाएँ कि हम अपने जीवन में योग का समावेश कैसे कर सकते हैं ?
2. छात्र यम और नियम के चार्ट बनाकर कक्षा में लगाएँ।

पाठ 3 सूक्ति सौरभ

सूक्ति का अर्थ है सुन्दर उक्ति अर्थात् जिसमें कहा गया प्रत्येक शब्द प्रेरणादायी हो। सूक्तियों का स्वाध्याय मानव को श्रेष्ठ जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरित करने में समर्थ है। सूक्तियों के वाचन से मानव मन की सुप्त शक्तियाँ उद्‌बुद्ध होकर मनुष्य को सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करने का कार्य करती हैं। निःसन्देह सूक्तियाँ गुणकारी औषधि के समान हृदय और मस्तिष्क पर सत्प्रभाव डालती हैं। सूक्तियाँ मनुष्य को अन्धकार से प्रकाश की ओर तथा मरणशीलता से अमरता की ओर ले जाने में समर्थ हैं। सूक्तियाँ हृदयग्राही, कालजयी, प्रेरक और उदात्त होती हैं। सूक्तियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं। यहाँ हम कुछ सूक्तियों का अध्ययन करेंगे–

1. **सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा ।** *यजु0 7/14*

भाव – वैदिक संस्कृति संसार की पहली संस्कृति है, और सारे संसार के लिए वरणीय है अर्थात् परमात्मा में विश्वास, आत्मा की अमरता में दृढ़ विश्वास, पुनर्जन्म को मानना, ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ और बलिवैश्वदेवयज्ञ– इन पाँच महायज्ञों का अनुष्ठान, गऊ माता का पालन पोषण। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के रूप में गुण कर्म स्वभावानुसार वर्ण व्यवस्था, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ आदि का परिपालन। ये हैं वैदिक संस्कृति के मूल

स्तम्भ, जो सभी के लिए वरणीय हैं।

2. न सा सखा यो न ददाति सख्ये। *ऋ0 10/6/28*

भाव– वह मित्र नहीं जो मित्र को सहयोग न दे अर्थात् मित्र शब्द दो अक्षरों का अद्भुत रत्न है। यह मित्र के शोक रूपी शत्रु को मार भगाता है, भय से रक्षा करता है, प्रीति और विश्वास उत्पन्न करता है, संकट आने पर सहायता करता है, इसलिए मित्र ऐसा हो जो विपत्ति के समय मित्र की सहायता करे।

3. हितकारी हो विमलमति, शुभमति दे जन जोय।
अस्वार्थी हो साथी शुभ , मित्र कहावे सोय।। *भक्ति प्रकाश'स्वामी सत्यानन्द*

4. आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः। *ऋ0 1/81/1*

भाव– चारों ओर से शुभ विचार हमारे पास आएँ अर्थात् अच्छे विचार मानव को ऊपर उठाते हैं, और बुरे विचार उसे नीचे गिराते हैं। अतः प्रत्येक मनुष्य को सर्वदा शुभ चिन्तन करना चाहिए, और कामना करनी चाहिए कि माता–पिता, गुरु और सभी दिशाओं से उसे भद्र विचार प्राप्त होते रहें।

5. आयुष्मान् जीव मा मृथाः। *अथर्व0 19/27/8*

भाव– लम्बी आयुवाला सार्थक जीवन जिओ, निरर्थक जीवन मत बिताओ अर्थात् हे मनुष्य ! तू उत्साह, उमंग और उत्कर्ष के साथ जी। क्षणभर प्रज्वलित होकर जीना ही सुजीवन है। धुआँ देते हुए दीर्घ काल तक जीना जीवन नहीं। मर मत। कायर मनुष्य जीवन में अनेक बार मरते है, लेकिन उत्साही मनुष्य सम्मान के साथ निर्भय होकर जीते हैं।

6. प्रेता जयता नरः। *साम0 1862*

भाव – विषयों में आसक्त न होने वाले मानवो! आगे बढ़ो और विजय प्राप्त करो अर्थात् हे मानव! आगे बढ़ो और विजय प्राप्त करो। पथ में आने वाली आपत्तियों को लाँघकर कुशलता से विजयी बनो। विजय उसी को प्राप्त होती है जो विजयी होने का साहस करता है।

7. अहमस्मि सहमानः। *अथर्व0 12/1/54*

भाव – मै विनम्र हूँ, सहनशील हूँ अर्थात् मैं सहनशील हूँ, मैं विरोधियों के प्रबल विरोध को हास्य के साथ सहन करना जानता हूँ। मैं अपने विरोधियों का भी अनिष्ट चिन्तन नहीं करूँगा। मैं समुद्र के समान गम्भीर हूँ। इसलिए मै कटुता को मधुरता के साथ सह लूँगा।

8. तेजोऽसि तेजो मयि धेहि। *यजु0 19/1*

भाव – हे प्रभु! तुम तेजस्वरूप हो, मुझ में तेज का आधान कर दो अर्थात् हे परमात्मा! आज संसार को ऐसे तेजस्वी और ओजस्वी सौभाग्य–विधाताओं की आवश्यकता है, जिनकी नसें लोहे की और अन्तःकरण वज्र के समान हों, जिनमें योद्धाओं का पराक्रम और तेजस्वियों का तेज एकत्र हो। हे प्रभु! तेरी कृपा के एक कण से सब कुछ हो सकता है। कृपा करो और हमारे जीवन को पराक्रम से भर दो।

9. मामि द्रुहः । *अर्थव0 9/5/4*

भाव – हे मानव! विश्व में किसी भी प्राणी से द्रोह, ईर्ष्या और वैर मत करो अर्थात् मानव को चाहिए कि वह मन, वचन और कर्म से किसी का बुरा न सोचे, किसी के प्रति वैर की भावना न रखे। सबकी भलाई करे। सबके कल्याण की कामना करे। हे मानव! ईर्ष्यालु मत बन। दूसरों की उन्नति देखकर ईर्ष्या मत कर। उन जैसा बनने का प्रयास कर।

10. धम्मं मणे, ना धम्मं

पियं मणे, निपियं,

सच्चं मणे, निलिकं । *संयुत्तनिकाय 1/8/6*

भाव – धर्म धारण करना चाहिए, अधर्म नहीं। प्रिय बोलना चाहिए, अप्रिय नहीं। सत्य बोलना चाहिए, असत्य नहीं।

11. एक बार वचन दे दिया तो उस वचन को तोड़ो मत। *कुरानशरीफ 16/19*

12. आदा धम्मो मुणेदव्वो।

भाव– आत्मा ही धर्म है, अर्थात् धर्म आत्मस्वरूप होता है। *आचार्य कुन्दकुन्द (प्रवचनसार 1/8)*

13 दुष्टमानव भय से आज्ञापालन करते हैं, अच्छे मानव प्रेम से। *अरस्तू*

14. अपना ही दोष ढूँढ निकालना ज्ञानवीरों का काम है। *विवेकानन्द*

15. ईश्वर की भक्ति करने से आत्मा में इतनी शक्ति आ जाती है कि पहाड़ के समान दुःख भी राई के समान तुच्छ लगता है। *स्वामी दयानन्द*

16. कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः । *अथर्ववेद 7/50/8*

भाव – पुरुषार्थ मेरे दाएँ हाथ में है और सफलता मेरे बाएँ हाथ में अर्थात् यह समस्त जगत् दैव और पुरुषार्थ पर प्रतिष्ठित है। इनमें दैव तभी सफल होता है जब मानव उचित समय पर पुरुषार्थ करे। इसलिए सफलता प्राप्त करने के लिए मनुष्य को हमेशा पुरुषार्थ करना चाहिए।

17. वरमेको गुणी पुत्रः न च मूर्खशतान्यपि।

भाव – सौ मूर्ख पुत्रों की अपेक्षा एक गुणी पुत्र श्रेष्ठ होता है अर्थात् जिस प्रकार तारों के समूह की अपेक्षा अकेला चन्द्रमा अन्धकार को दूर कर देता है, उसी प्रकार एक श्रेष्ठ पुत्र सौ कुपुत्रों की अपेक्षा कुल के यश में वृद्धि कर देता है।

शब्दार्थ

विश्ववारा	–	विश्व के लिए वरणीय
सहमान	–	सहनशील
धेहि	–	प्रदान करे
विश्वतः	–	सब ओर से
भद्राः	–	शुभ

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. वैदिक संस्कृति सारे संसार के लिए क्यों वरणीय है ?
2. सच्चा मित्र किसे माना गया है ?
3. मनुष्य के विचार कैसे होने चाहिए ?
4. विजय प्राप्त करने के लिए मनुष्य में कौन–कौन से गुण होने चाहिए ?
5. ईश्वर की भक्ति से मनुष्य की आत्मा में क्या परिवर्तन हो जाता है ?

भावात्मक प्रश्न

1. सफलता को पुरुषार्थ का पर्याय क्यों माना गया है ?
2. कुल के यश की वृद्धि के लिए कैसे पुत्र की कामना की गई है ?
3. मानव को अन्य प्राणियों से द्रोह क्यों नहीं करना चाहिए ?
4. सहनशील व्यक्ति का व्यवहार कैसा होता है ?

क्रियात्मक

1. अध्यापक छात्रों से भारतीय संस्कृति के मूलभूत आदर्श वाक्यों को संकलित करवाकर विद्यालय में प्रदर्शित करवाएँ।
2. अध्यापक वैदिक सूक्तियों एवं लौकिक सूक्तियों की छात्रों में प्रतियोगिता करवाएँ।

भक्ति

जब लग नाता जगत का तब लग भक्ति ना होय।
नाता तोड़े हरि भजे भक्त कहावै सोय।।
भक्ति भेष बहु अन्तरा जैसे धरनि अकास।
भक्त लीन गुरु चरण में भेष जगत की आस।।

कबीर

पाठ 4

सबसे बड़ा धर्म ?

मानव धर्म

गुरु गोविन्द सिंह जी ने मानव धर्म को ही सर्वोपरि माना। उनके जीवन काल का एक संस्मरण इस बात का प्रमाण है। गुरु गोबिन्द जी ने भाई कन्हैया की नियुक्ति रणभूमि में घायलों को जल पिलाने के लिए की। युद्ध के दौरान हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख, पठान आदि किसी भी सैनिक को प्यास लगती उसे वे पानी पिला देते। युद्धभूमि में घूम–घूम कर घायल सैनिकों को बिना किसी पक्षपात के पानी पिलाते। सिक्ख सैनिकों को यह बात अच्छी नहीं लगी कि वे शत्रुओं के सैनिकों को भी जल पिलाए, इसकी शिकायत उन्होंने गुरु जी से की। गुरु गोविन्द सिंह जी ने भाई कन्हैया को बुलाकर वास्तविकता की जानकारी ली। भाई कन्हैया ने बताया कि गुरु जी, सब आप की ही कृपा है, युद्धभूमि में मुझे कोई भी अपना या पराया नहीं महसूस होता। उसकी यह बात सुनकर गुरुजी बहुत प्रसन्न हुए व उसे गले से लगा कर कहा, 'अरे भाई! तूने गुरुमत को सही तरह से समझा है।' इसके बाद गुरु जी ने भाई कन्हैया के नेतृत्व में एक सेवादार जत्था तैयार करवाया जो दोनों पक्षों के सैनिकों को न केवल पानी पिलाए बल्कि घायलों की मरहम पट्टी भी बिना किसी भेदभाव के करे।

इस प्रकार गुरु गोबिन्द जी की नजर में कोई भी वैरी या बेगाना नहीं था, उनकी नजर में –

अवल अल्ला नूर उपाया, कुदरत दे सब बन्दे।

एक नूर तों सब जग उपजया, कौन भले कौन मन्दे ।।

गुरु जी की नजर में ऊँच– नीच या जात–पात का कोई भेदभाव नहीं था। गुरु नानक देव जी द्वारा शुरू की गई लंगर की प्रथा को भी गुरु गोविन्द सिंह जी ने जारी रखा जो आज भी जारी है, जिसमें बिना किसी भेद–भाव के सर्वजन एक पंक्ति में बैठ कर ही भोजन करते हैं। अतः गुरु गोविन्द सिंह जी ने सच्चे सन्त सिपाही बन कर जहाँ राष्ट्र की सुरक्षा का लक्ष्य अपने सामने रखा, वहीं सेवा, त्याग व मानवधर्म को सर्वोपरि माना।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. रणभूमि में जल पिलाने की जिम्मेवारी किसे दी गई ?
2. लंगर की प्रथा को किसने शुरू किया ?
3. गुरु गोविन्द सिंह को किस नाम से जाना जाता है ?

भावात्मक प्रश्न

1. गुरु जी के पूछने पर भाई कन्हैया ने क्या स्पष्टीकरण दिया ?
2. भाई कन्हैया की अध्यक्षता में तैयार किए गए जत्थे को क्या काम सौंपा गया ?
3. लंगर प्रथा शुरू करने के पीछे भाव क्या था ?

क्रियात्मक

अध्यापक छात्रों से सिक्खों के सभी गुरुओं व उनके महत्त्वपूर्ण कार्यों की सूची तैयार करवाएँ।

स्वार्थमय है सारा संसार

विविध कामनाओं के कर से प्रतिपालित है भव–व्यवहार।
परम पवित्र अतीव प्रशंसित नरहित–रत है पर–उपकार।
पर उसका आधार कान्त साधन है, कलित कीर्ति–विस्तार।
है वह स्वार्थ नितान्त कलंकित निन्दनीय पातक–आगार।
जिसका है उद्देश्य प्रजा–पीड़न निर्दय बन नर–संहार।
नर क्या पिपीलिका तक का भी किये बिना कोई उपकार।
निज हित–साधन बहु संयत बन है जगती–जनजीवन–सार।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' रचनावली : खण्ड–9

पाठ 5 योगःकर्मसु कौशलम्

श्रीमद्भगवद्गीता न केवल भारत का ही अपितु विश्व का श्रेष्ठ ग्रन्थ है। श्रीकृष्ण के मुखारविन्द से गाई जाने के कारण इसे गीता कहा गया। गीता वेद व्यास रचित महाभारत के भीष्मपर्व से उद्धृत है। इसमें 18 अध्याय एवं 700 श्लोक हैं। इसमें ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग प्रधान हैं। इन्हें योग की त्रिवेणी कहा जाता है। जो इन तीनों योगों में सफलता पा लेता है वही मोक्ष का अधिकारी बन पाता है।

आत्मा और परमात्मा को जोड़ देने वाली इस प्रक्रिया को योग भी कहा जाता है योगाभ्यास, योग साधना करके श्रेयार्थी पूर्णता का लक्ष्य प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। योगाभ्यास के दो मार्ग हैं– एक भौतिक और दूसरा आध्यात्मिक। भौतिक वे हैं, जिनमें शरीर की क्रियाएँ करनी पड़ती हैं और आत्मिक वे हैं जिनमें मन और चेतना को परिष्कृत किया जाता है। शरीरगत अभ्यास में आसन, प्राणायाम, नेति, धोति, वस्ति, कपालभाति जैसे साधन बताए जाते हैं। ये सब कार्य शरीर को करने पड़ते हैं इसलिए इनके परिणाम भी आमतौर पर भौतिक स्तर के होते हैं। शरीरगत योग 84 प्रकार के हैं। इन योगासनों से शरीर पुष्ट होता है। मानसिक साधनाओं में प्रत्याहार, ध्यान, धारणा और समाधि जैसे प्रसंग आते हैं। वे सर्व साधारण के लिए सुलभ हैं। मानसिक योग साधनाओं में तीन ही प्रमुख हैं–

1. ज्ञानयोग 2. कर्मयोग 3. भक्तियोग। इन योगों को बाल–वृद्ध, नर–नारी, साक्षर–निरक्षर कोई भी किसी स्थिति में कर सकता है।

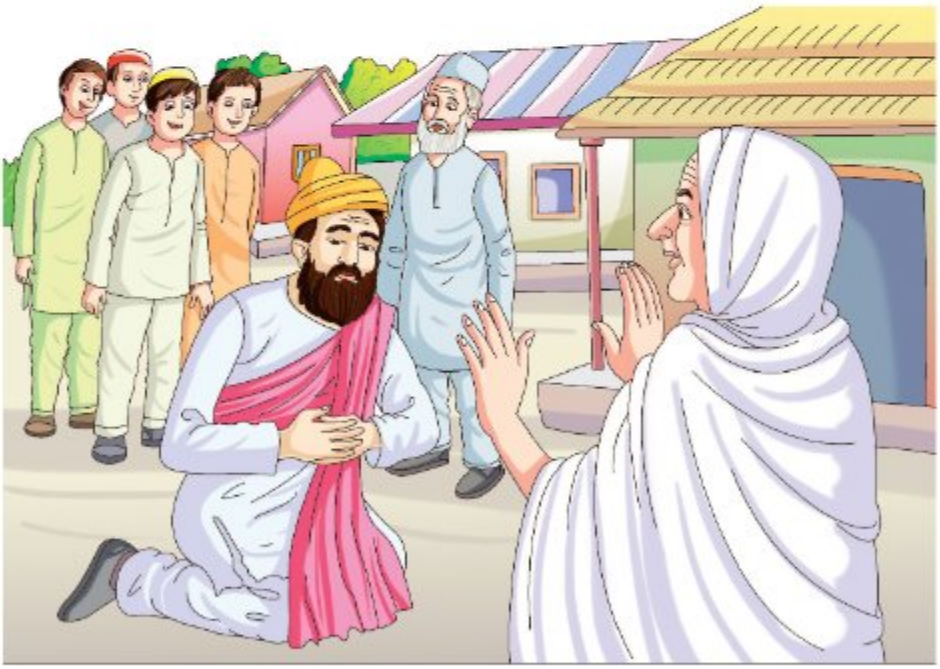

ज्ञानयोग – ज्ञानयोग का उद्देश्य जीवन के स्वरूप और उस के सदुपयोग से परिचित होना है। इसके लिए हमें बार–बार आत्मचिन्तन करना चाहिए और अपनी वर्तमान स्थिति पर विचार करना चाहिए। हमें जानना चाहिए कि गृहस्थ,

शिक्षा, चिकित्सा, वाहन, मनोरंजन आदि केवल हमारे भौतिक जीवन में सहायक हैं न कि मुख्य उद्देश्य की प्राप्ति में और न ही ये तृष्णा वासना की पूर्ति का साधन हैं। हमें अपने भौतिक और आध्यात्मिक साधनों को विराट् ब्रह्म से एकरूप होने व विश्वकल्याण के कार्यों के लिए समर्पित कर देना चाहिए। आत्मा एवं विश्व के स्वरूप को जानना अनेक संशयों को दूर करने वाला है। जब यह सच्चाई स्पष्ट होगी तब समझना चाहिए कि हमें आत्मज्ञान हुआ और यही ज्ञानयोग होगा।

सूफी सन्त रबिया अपनी ईश्वर भक्ति के लिए प्रसिद्ध थी। इबलीस नामक नास्तिक उसका समकालिक था। एक दिन एक व्यक्ति ने रबिया से कहा– ''इबलीस दिन–रात आपकी बुराई करता है, आप क्यों उसकी बुराई नहीं करतीं।'' इस पर रबिया ने उत्तर दिया– ''इबलीस भी उसी ईश्वर का पुत्र है, जिसकी मै हूँ, अपने भाई की बुराई मैं कैसे करूँ ?'' जब इबलीस को इसका पता चला तो रबिया के चरणों मे नत–मस्तक हो गया। अतः सिद्ध होता है कि ज्ञानयोग का प्रकाश जब किसी के अन्तःकरण में आता है तो वह अपना सर्वस्व मानव कल्याण के लिए समर्पित करने लगता है।

कर्मयोग– ज्ञानयोग का अगला चरण कर्मयोग है। यह ज्ञानयोग का व्यावहारिक रूप है। समस्त योगों मे कर्मयोग श्रेष्ठ है। मनुष्य कर्म करने के लिए संसार में आया है। निष्काम कर्म करना ही मनुष्य को बन्धन से मुक्त करता है। सभी प्रकार की कामनाओं और फल की इच्छा से रहित कर्म ही निष्काम कर्म कहलाता है। इसी को अनासक्ति भाव कहा गया है। प्राणिमात्र का आधार केवल कर्म करने में निहित है, फल में नही। गीता के दूसरे–तीसरे अध्याय में इसी कर्मयोग की चर्चा है। श्रीकृष्ण ने कहा भी है –

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।।

हे अर्जुन! तेरा काम कर्म करना है न कि फल की इच्छा करना। कर्म को फल का कारण मत मान और ऐसा भी न हो कि तू कर्म के फल के अभाव में काम करना ही छोड़ दे। काम कर फल स्वयं मिलेगा और फल जो मिले उससे सन्तुष्ट हो।

निष्काम कर्म की भावना को दर्शाने वाला एक प्रसंग यहाँ उल्लेखनीय है। स्वामी विवेकानन्द ने अपनी साधना – उपासना छोड़ दी और कलकत्ता में फैले प्लेग के प्रकोप से लोगों को बचाने में जुट गए। एक भाई ने पूछा– 'महाराज! आपकी उपासना – साधना का क्या हुआ ?' स्वामी जो ने कहा– 'भगवान् के पुत्र दुःखी हों और मैं उनका नाम जप रहा होऊँ, क्या तुम इसे उपासना समझते हो?'

ऐसा ही एक प्रसंग यहाँ द्रष्टव्य है। पैसे की कमी के कारण जब विवेकानन्द, रामकृष्ण आश्रम की जमीन बेचने को तैयार हो गए, तब एक शिष्य ने पूछा– 'महाराज! आप गुरु स्मारक बेचेंगे क्या ?' विवेकानन्द ने उत्तर दिया, 'मठ–मन्दिरों की स्थापना संसार की भलाई के लिए होती है। यदि उनका उपयोग भले काम में होता हो तभी उन की उपयोगिता है। अतः निष्काम कर्म करना ही कर्मयोग है।'

भक्तियोग – भक्तियोग का भी मानवीय जीवन में बहुत महत्त्व है। भक्ति का अर्थ है– प्यार, भक्तियोग का अर्थ है– प्यार का विकास। भगवान् से प्यार करना, परमात्मा की भक्ति करने का लक्ष्य है, उस विराट् ब्रह्म एवं विश्व के हर मनुष्य से प्रेम करना। समाज एवं सांसारिक चेतना के रूप में हम ईश्वर की प्रतिमूर्ति देखते हैं। जब भी हमारे दिव्यचक्षु खुलेंगे तभी हमें ईश्वर के दर्शन हो पाएँगे और उनसे व अन्य मानवों से आत्मीयता, सद्भाव, सेवा और उदारता का प्यार भरा व्यवहार करने का मन करेगा। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का सतत विकास होगा। जिस प्रकार हमें सदा अपने परिवार की उन्नति की लगन बनी रहती है, उसी प्रकार जब मानव कल्याण या यूँ कहें, समस्त विश्व के कल्याण की भावना हमारे भीतर पैदा होगी तब हमारी भाक्तियोग की साधना फलीभूत हो पाएगी। लोकमंगल के लिए कटिबद्ध होना ही सच्ची भक्तियोग साधना है।

निष्कर्ष यह है कि ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग की जीवन साधना वस्तुतः उच्चकोटि का सर्वसुलभ योगाभ्यास है। इस त्रिविध योग की विचारणा एवं कार्यशैली यदि हमारे व्यावहारिक जीवन में घुल–मिल जाए, तो जीवन का उद्देश्य सरलता से पूर्ण हो सकता है। श्री कृष्ण ने भी एक जगह गीता में कहा है –

यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते।

एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति सः पश्यति।।

अर्थात् ज्ञानयोगियों द्वारा जो परमधाम प्राप्त किया जाता है, कर्मयोगियों द्वारा भी वही प्राप्त किया जाता है। इसलिए जो पुरुष ज्ञानयोग और कर्मयोग को फलरूप में एक देखता है वही यथार्थ देखता है। ज्ञानयोग एवं कर्मयोग के साथ भक्तियोग के समन्वय से मनुष्य का प्रत्येक कार्य पूरी तरह सफल होता है, यही कर्म कौशल कहलाता है और कर्म कौशल ही वास्तविक योग है।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. गीता महाभारत के किस पर्व से उद्धृत है?
2. गीता में कितने अध्याय व कितने श्लोक हैं ?
3. योग किसे कहा गया है ?
4. योगाभ्यास के दो मार्ग कौन से हैं ?
5. मानसिक योग साधनाओं में तीन प्रमुख योग कौन–कौन से हैं ?
6. महाभारत के रचयिता कौन हैं ?

भावात्मक प्रश्न

1. ज्ञानयोग के सम्बन्ध में सूफी सन्त रबिया का दृष्टिकोण स्पष्ट करें।
2. किस घटना से स्पष्ट होता है कि स्वामी विवेकानन्द कर्मयोगी थे ?
3. भक्तियोग का प्रमुख लक्ष्य क्या है ?

क्रियात्मक

1. शिक्षक छात्रों में नैतिक मूल्यों के विकास हेतु विभिन्न धार्मिक ग्रन्थों के आधार पर कर्म प्रेरक प्रसंगों को सुनाएँ और कक्षा में उन पर चर्चा करें।
2. अध्यापक श्रीकृष्ण एवं अर्जुन के जीवन से सम्बन्धित अन्य पहलुओं पर भी विस्तार से कक्षा में चर्चा करें।
3. पुस्तकालय से धर्म सम्बन्धी पुस्तकें लेकर पढ़ें।

गीता–पाठ

षोडश अध्याय

इस संसार में शुभ व अशुभ के भेद से सम्पत्ति दो प्रकार की है। इस विषय का वर्णन श्रीमद्भगवद्गीता के सोलहवें अध्याय में किया गया है। इसका नाम दैवासुर–सम्पद्–विभाग–योग है। इसमें 24 श्लोक हैं। इस अध्याय में कुल 30 सम्पदाओं का वर्णन किया गया है। जिनमें 26 दैवी एवं 6 आसुरी सम्पदाओं का उल्लेख है। वर्तमान में इनको ही जीवनमूल्य कहा जाता है।

नाम दैवीसम्पदा	अर्थ	नाम दैवीसम्पदा	अर्थ
अभयम्	निडरता	सत्त्वसंशुद्धिः	मन की निर्मलता
ज्ञानयोग व्यवस्थितिः	ज्ञान और ध्यान में स्थिरता	दानम्	देना
दमः	इन्द्रियों को वश में रखना	यज्ञः	हवन
स्वाध्यायः	पढ़ना	तपः	नियमित कार्य करना
आर्जवम्	सरलता	अहिंसा	हिंसा न करना
सत्यम्	सच्चाई	अक्रोधः	क्रोध न करना
त्यागः	दोषों को छोड़ना	शान्तिः	मन की शान्ति
अपैशुनम्	चुगली न करना	दया	कृपा
अलोलुप्त्वम्	लोभ न करना	मार्दवम्	कोमलता
ह्रीः	लज्जा	अचापलम्	चंचलता न दिखाना
तेजः	तेज	क्षमा	क्षमा
धृतिः	धैर्य	शौचम्	पवित्रता
अद्रोहः	शत्रुभाव न रखना	नातिमानिता	घमण्ड न करना

आसुरी सम्पदाओं का वर्णन निम्नक्रम में कराया–

नाम आसुरी सम्पदा	अर्थ	नाम आसुरी सम्पदा	अर्थ
दम्भः	ढोंगी	दर्पः	घमण्ड
अभिमानः	अहंकार	क्रोधः	क्रोध
पारुष्यम्	कठोरता	अज्ञानम्	नासमझी

उपर्युक्त दैवी एवं आसुरी सम्पदाओं के फल का वर्णन करते हुए कहा है कि दैवी सम्पदा कष्टों से छुटकारा दिलाती है तथा आसुरी सम्पदा बन्धन का कारण बनती है। आसुरी सम्पदा वालों के लक्षणों का वर्णन करते हुए यह निर्देश दिया गया है कि शास्त्र के अनुकूल आचरण करना चाहिए। क्योंकि–

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ।।16।।

जो पुरुष शास्त्रविधि को त्यागकर मनमाना आचरण करता है, वह न तो सिद्धि को, न परम गति को और न ही सुख को प्राप्त होता है।

सप्तदश अध्याय

इस संसार में अध्ययनकार्य के प्रति श्रद्धावान् विद्यार्थी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करता है। इस विषय का वर्णन श्रीमद्भगवद्गीता के सत्रहवें अध्याय में किया गया है। इसका नाम श्रद्धात्रय विभाग–योग है। इसमें 28 श्लोक हैं। इस अध्याय में श्रद्धा एवं शास्त्र विपरीत घोर तप करने वालों का वर्णन किया गया है। आहार, यज्ञ, तप और ज्ञान के विभिन्न भेदों का वर्णन किया गया है। अन्त में ओ३म् तत् सत् के प्रयोग की व्याख्या की गई है। इस अध्याय में श्रद्धा को निम्न तीन भागों में बाँटा गया है। सात्विकी श्रद्धा, राजसी श्रद्धा एवं तामसी श्रद्धा।

सात्विकी श्रद्धावाले पुरुष देवताओं की उपासना करते हैं, राजसी श्रद्धा वाले पुरुष यक्ष व राक्षसों की उपासना करते हैं एवं तामसी श्रद्धावाले पुरुष प्रेत व भूत गणों की उपासना करते हैं। इसी प्रकार आहार, यज्ञ, तप और दान भी तीन–तीन प्रकार के होते हैं। यहाँ तप के विषय में कहा गया है कि–

देवता, ब्राह्मण, गुरु (माता, पिता, आचार्य, शिक्षक) और ज्ञानीजनों का पूजन, पवित्रता, सरलता, ब्रह्मचर्य और अहिंसा ये शारीरिक तप कहे जाते हैं

उद्वेग रहित, प्रिय और हित कारक एवं यथार्थ भाषण तथा वेद शास्त्रों का पठन एवं परमेश्वर के नाम जप का अभ्यास ही वाणी सम्बन्धी तप कहा जाता है।

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः।

भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ।।17।।

मन की प्रसन्नता, शान्त भाव, भगवत् चिन्तन करने का स्वभाव, मन का निग्रह और अन्तः करण के भावों की भली–भाँति पवित्रता–ये सब मानस अर्थात् मन सम्बन्धी तप कहे जाते हैं।

अष्टादश अध्याय

श्रीमद्भगवद्गीता के अठारहवें अध्याय का नाम मोक्षसन्न्यास योग है। इसमें कुल 78 श्लोक हैं। इस अध्याय में त्याग व कर्मों के होने में सांख्य सिद्धान्त का वर्णन है। इसमें फल सहित वर्ण–धर्म का वर्णन है। ज्ञान निष्ठा के विषय का वर्णन है। भक्ति सहित निष्काम कर्मयोग के विषय का वर्णन कर श्रीमद्भगवद्गीता के महत्त्व का वर्णन किया गया है। संसार में प्रत्येक मनुष्य को संसारिक सुख में अधिक आसक्त होने से दुःख प्राप्त होता है। अतः मनुष्य को अनासक्तभाव से सांसारिक संसाधनों का उपभोग करना चाहिए तथा भगवद् अर्पणबुद्धि से त्यागपूर्वक कर्म करना चाहिए। कार्य की सिद्धि में पाँच कारण सहायक होते हैं। अधिष्ठान, कर्त्ता, करण, अनेक प्रकार की चेष्टाएँ एवं दैव। अधिष्ठान का अर्थ है कार्य करने की

परिस्थितियाँ और दैव का अर्थ है भाग्य। इसी प्रकार इस अध्याय में तीनों गुणों के अनुसार ज्ञान, कर्म, कर्ता, बुद्धि, धृति और सुख के भिन्न–भिन्न भेदों का वर्णन है।

इसी क्रम में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्रों के कर्त्तव्यों का वर्णन किया गया है। अन्त में भक्ति सहित निष्काम कर्मयोग का वर्णन कर कर्ता को सभी चिन्ताओं से मुक्त करते हुए कहा कि–

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।।18।।

सम्पूर्ण धर्मों को अर्थात् सम्पूर्ण कर्तव्यकर्मों को मुझमें त्याग कर तू केवल एक मुझ सच्चिदानन्दघन वासुदेव परमात्मा की ही अनन्य शरण को प्राप्त हो। मैं तुझे सम्पूर्ण पापों से मुक्त कर दूँगा। तू शोक मत कर।

कर्मयोग

नयन मनुज के सदा सफलता मुख अवलोकें।
दोनों कर बन परम कान्त सुरतरु फल लोकें।
उसको बहती मिले मरु–अवनि में रसधारा।
वह पाता ही रहे अमरपुर–सा सुख सारा।
कैसे? किस साधन के किये? तो उत्तर होगा यही।
सब दिनों कर्मरत जो रहा सिद्धि पा सका है वही।
उषाराग को लसित कर्म अनुराग बनाता।
कर्मसूत्र में बँधा दिवाकर है दिखलाता।
है कर्मत्याग ही रगों में परिपूरित निर्जीवता।
है कर्मयोग के सूत्र में बँधी समस्त सजीवता।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' रचनावली : खण्ड–9

पाठ 6

भारतीय वीरांगना

महारानी अहिल्याबाई होलकर

अंग्रेजी शासन काल में महात्मा फुले द्वारा आरम्भ की गई समाज सुधार की गतिविधियों को छत्रपति साहू महाराज, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, श्री रामासामी पेरियार, श्री नारायण गुरु, अण्णाभाऊ साठे, कर्मवीर भाऊराव पाटिल ने आगे बढ़ाया। इससे पूर्व धर्म के ठेकेदार स्त्री को शूद्रवत् समझकर उसका तिरस्कार किया करते थे। पति के साथ सती होना पुण्य का कार्य समझा जाता था। ऐसे समय में महान् क्रान्तिकारी एवं सर्वजन कल्याणकारी महिला शासिका महारानी अहिल्याबाई होलकर का जन्म हुआ।

अहिल्याबाई का जन्म 31 मई, 1725 को अहमदनगर जिले के चौंडी नामक गाँव में हुआ। इनका विवाह मध्य प्रदेश में हिन्दवी स्वराज्य की पताका फहराने वाले महान् योद्धा मल्हारराव होल्कर के पुत्र खंडेराव होल्कर के साथ हुआ। पति की आकस्मिक मृत्यु होने पर रूढ़िवादी परम्परा के अनुसार अहिल्याबाई के सती होने की नौबत आगई, परन्तु जनहित को ध्यान में रखते हुए मल्हारराव होल्कर ने धर्म की रूढ़िवादी परम्परा को तोड़ते हुए, अहिल्याबाई को न केवल सती होने से रोका, अपितु राज्य की बागडोर भी अहिल्याबाई को सोंप दी। अहिल्याबाई ने भी धर्म के पाखण्ड के विरुद्ध विद्रोह करते हुए व लोकनिन्दा की चिन्ता न करते हुए राज्य की बागडोर सम्भाली। उसका मत था कि सतीप्रथा से मेरी मृत्यु हो जाने पर एक गलत परम्परा का निर्वाह होगा, परन्तु मेरे जीवित रहने पर लाखों प्रजाजनों को सुख मिलेगा।

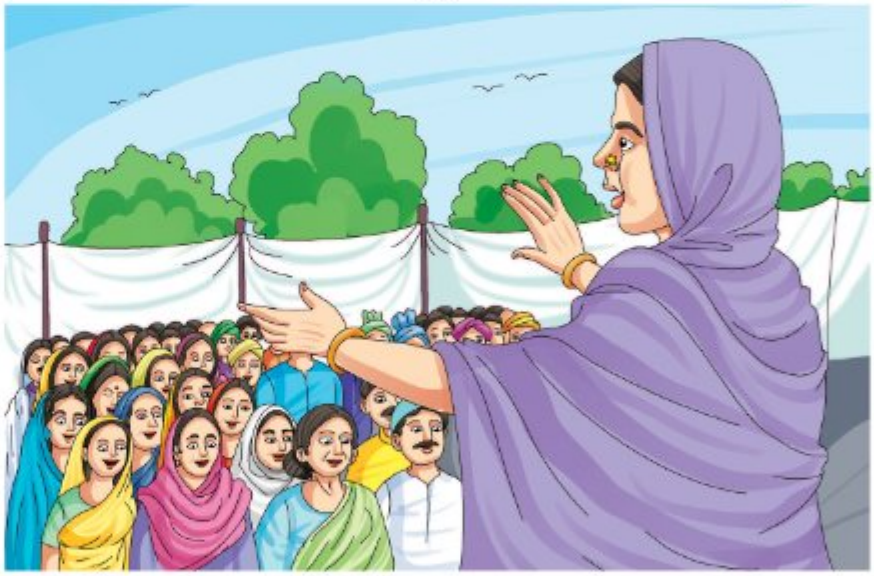

अहिल्याबाई ने पति, श्वसुर व पुत्र की मृत्यु होने पर भी धैर्य न खोते हुए राज्य का सफल संचालन किया। प्रजा को कष्ट देने वाले असामाजिक तत्त्वों को पकड़ कर समझाने का प्रयास किया तथा जीवनयापन हेतु जमीनें देकर सुधार का रास्ता दिखाया। प्रजा को करों से राहत देते हुए न्यूनतम कर वसूला जाने लगा। यह भी सुनिश्चित किया गया कि करों से प्राप्त धन का उपयोग केवल प्रजाहित के कार्यों में ही हो। अहिल्याबाई ने स्वयं को राज्य के धन की मालकिन न मान कर जिम्मेदार संरक्षक माना, जिसका यह कर्तव्य है कि प्रजा ईश्वर द्वारा प्रदत्त इस धरोहर स्वरूप निधि का उपयोग केवल जनहित में ही करे। वह प्रजा के सुख–दुःख की जानकारी स्वयं प्रजा से मिलकर लेती तथा न्यायपूर्ण निर्णय देती। उसके राज्य में जाति भेद की कोई मान्यता नहीं थी व सारी प्रजा समानरूप से आदर की हकदार थी। अहिल्याबाई लोकमाता के रूप में जानी जाने लगी, उसका मानना था कि प्रजा का पालन सन्तान की तरह करना ही राजधर्म है। उत्तराधिकारी न होने की स्थिति में प्रजा को दत्तक लेने का व स्वाभिमान पूर्वक जीने का अधिकार दिया गया।

यदि कोई राज्य कर्मचारी अवैधरूप से प्रजा से वसूली करता पाया जाता तो उसे तुरन्त दण्ड देकर अधिकार विहीन कर दिया जाता था। समस्त प्रजाजनों को न्याय मिले, इसके लिए गाँवों में पंचायती व्यवस्था को मजबूत किया गया। कृषि की अभिवृद्धि पर ध्यान देते हुए कृषकों को न्याय देने की व्यवस्था की गई। बेरोजगारों हेतु रोजगार–धन्धों की योजनाएँ बनाई गई। प्रजा की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए रास्ते, पुल, घाट, धर्मशालाएँ, बावड़ी व तालाब बनाए गए। रास्ते के दोनों ओर वृक्षारोपण किए गए। निर्धन तीर्थ यात्रियों की सुविधा के लिए अन्नदान क्षेत्र खोले गए। उसने अपने राज्य में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत के अन्य राज्यों में भी इन सुविधाओं की व्यवस्था की, जैसे बिहार के गया धाम में फल्गू नदी के तट पर निर्मित विष्णुपद मन्दिर व देवघाट, हरिद्वार में गंगा जी के तट पर कुशावर्त घाट आदि का निर्माण करवाया।

अहिल्याबाई ने समाज शत्रुओं व असामाजिक तत्त्वों पर अंकुश लगा कर उनके भी पुनर्वास की व्यवस्था की। उनके सामाजिक व राजकीय कार्यों से प्रजा प्रसन्न व पूर्णरूपेण संतुष्ट थी, इसी का प्रभाव था कि निजामशाही व पेशवाशाही के अनेक लोग अपना राज्य छोड़कर इनके राज्य में आकर बसने की इच्छा व्यक्त किया करते थे।

अहिल्याबाई के शासन काल के सुख व शान्तिपूर्ण वातावरण की चर्चा पण्डित जवाहर लाल नेहरू भी किया करते थे। भारत की इस वीरांगना ने अन्य राजाओं के सामने एक उच्च आदर्श स्थापित किया। अतएव उन्हें तत्कालीन सर्वजन कल्याणकारी प्रथम भारतीय महिला शासिका के पद से सम्मानित किया गया।

13 अगस्त सन् 1795 ई0 को लोकमाता अहिल्याबाई जन–जन के हृदय पर अपनी छाप छोड़ कर परलोक सिधार गई।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. अहिल्याबाई होल्कर का जन्म कब व कहाँ हुआ ?
2. अहिल्या का विवाह किसके साथ हुआ ?
3. अहिल्याबाई होल्कर के शासन की विशेषताएँ बताइए।
4. अहिल्याबाई द्वारा निर्मित घाट व मन्दिर का नाम बताओ।
5. अहिल्याबाई की मृत्यु कब हुई ?

भावात्मक प्रश्न

1. अहिल्याबाई के काल में प्रचलित रूढ़िवादी परम्पराओं का वर्णन करो।
2. अहिल्याबाई ने कर व्यवस्था में क्या सुधार किया ?
3. प्रजा की सुविधा के लिए किए गए किन्हीं दो कार्यों का वर्णन करो।
4. अहिल्याबाई को लोकमाता क्यों कहा जाता था ?
5. अच्छे शासक में क्या गुण होते है ?

क्रियात्मक

अध्यापक इसी प्रकार अन्य वीरांगनाओं एवं आस–पास के किसी भी क्षेत्र में विशेष योगदान देने वाली महिलाओं का संक्षिप्त परिचय कक्षा में दें तथा छात्रों को उनकी सूची बनाकर कक्षा में प्रस्तुत करने को कहें।

पाठ 7

विज्ञानाचार्य

सी.वी.रमन

चन्द्रशेखर वेंकट रमन एक महान् वैज्ञानिक हुए हैं। उनका जन्म भारत के वर्तमान तमिलनाडु राज्य के नगर तिरुचिरापल्ली में 7 नवम्बर, सन् 1888 को हुआ था। उनकी माता का नाम पार्वती अम्मल था। वह धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी। उनके पिता का नाम चन्द्रशेखर अय्यर था, जो एक अध्यापक थे। विलक्षण बुद्धि के बल पर रमन ने मात्र ग्यारह वर्ष की आयु में दसवीं कक्षा पास कर ली। रमन के पिता उन्हें उच्च शिक्षा दिलाने के लिए विदेश भेजने के इच्छुक थे किन्तु ब्रिटिश सर्जन ने उन्हें यहीं रखने की सलाह दी। रमन ने यहाँ रहकर दो वर्ष तक मद्रास के प्रेसीडैंसी कॉलेज में अध्ययन किया। अंग्रेजी और भौतिकी में प्रथम आने पर उन्हें स्वर्ण पदक मिला। सन् 1906 में उन्होंने एम.ए. की डिग्री प्राप्त की।

रमन विज्ञान में इतनी रुचि रखते थे कि वे स्वयं पत्रिकाओं के लिए विज्ञान सम्बन्धी शोध लेख लिखने लगे। उनके शोधपूर्ण लेख लिखने से परिवार के लोग बहुत चकित हुए। पत्रिकाओं में नाम छपने से लोग उन्हें सम्मान देने लगे।

मात्र 19 वर्ष की आयु में वे ''इण्डियन एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन ऑफ साईंस'' के सदस्य बन गए। उन्हें कोलकाता के वित्तमन्त्रालय में प्रशासनिक अधिकारी के पद पर आसीन किया गया इसी, समय उनका विवाह भी हो गया। अब विज्ञान में उनकी अधिक रुचि बढ़ गई थी।

रमन ने वायलिन और सितारों से उत्पन्न ध्वनि का अध्ययन शुरू कर दिया। उन्होंने जानना चाहा कि वाद्यों से मधुर ध्वनि कैसे उत्पन्न होती है। वे इस शोध में संलग्न हो गए। इसी प्रकार रमन नीले जल के बारे में सोचते रहते थे कि इसका नीला रंग क्यों हैं ? वे अन्त में इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि नीले रंग का कारण पानी के अणुओं द्वारा प्रकाश को छितरा देना है। यह प्रयोग उन्होंने कोलकाता की प्रयोगशाला में सिद्ध किया था, जहाँ से उन्होंने विज्ञान शोध कार्य प्रारम्भ किया। यहीं से लोग इन्हें जानने लग गए।

अभी तक रमन बाबू भारतीय विज्ञान परिषद् के उपसभापति थे, किन्तु सन् 1919 में डॉक्टर अमृतलाल सरकार की मृत्यु हो जाने पर वे इस संस्था के अवैतनिक अध्यक्ष भी नियुक्त किए गए और उन्हें अनुसन्धान की स्वच्छन्द सुविधाएँ प्राप्त होने लगीं।

सी.वी. रमन की विज्ञान साधना भारत ही नहीं विश्व में भी महत्त्वपूर्ण है। सन् 1921 में ब्रिटिश के विश्वविद्यालयों के सम्मेलन में कोलकाता विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों के प्रतिनिधि के रूप में उन्हें लन्दन भेजा गया। उनकी यह प्रथम विदेश यात्रा थी। इस यात्रा के दौरान उन्होंने अपने प्रभावोत्पादक एवं मौलिक भाषणों

द्वारा अपने आविष्कारों एवं नए प्रयोगों का ज्ञान पाश्चात्य वैज्ञानिकों को कराया, जिससे सी.वी.रमन का उन पर अमिट प्रभाव पड़ा।

सन् 1917 से अब तक वे प्रकृति के रंगों के अध्ययन एवं विश्लेषण में लगे रहे। उन्होंने कुहरे से तथा बादलों से निर्मित इन्द्रधनुष के रंगों की व्याख्या की। सामुद्रिक यात्रा से उन्हें समुद्र के नीले रंग के अध्ययन का अवसर मिला तथा विश्लेषण करके वे इस निर्णय पर पहुँचे कि समुद्र के जल में नीला रंग प्रकाश के प्रभाव के कारण होता है। उन्होंने समुद्र के गहरे रंग की व्याख्या इन सीधे–सादे शब्दों में की– 'गहरे समुद्र के गहरे नीले रंग का कारण है, आकाश की नीलिमा का अक्स अर्थात् प्रतिबिम्ब।'

वे सितम्बर 1921 में स्वदेश लौट आए। उन्होंने आकाश, समुद्र और ग्लेशियर के रंगों के सम्बन्ध में सफल प्रयोग किये। उन्होने सिद्ध किया कि केवल पारदर्शक द्रव्यों में ही नहीं अपितु बर्फ और स्फटिक जैसे ठोस पारदर्शक पदार्थों में भी अणुओं की गति के कारण प्रकाश का परिक्षेपण होता है।

सन् 1924 में कनाडा में ब्रिटिश साम्राज्य के वैज्ञानिकों के सम्मेलन में उन्होंने भारत की ओर से भाग लिया, जहाँ उनकी भेंट संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा के वैज्ञानिकों से हुई तथा उन्होंने अमेरिका और कनाडा की प्रयोगशालाओं का निरीक्षण किया। कनाडा में उन्होंने विश्व की सबसे बड़ी दूरबीन देखी। इस प्रकार 10 माह तक विदेशों में रहकर वे 18 मार्च, 1924 को भारत वापस आए तथा पुनः वैज्ञानिक अनुसन्धान में लग गए। उसके बाद उन्होंने 'साबुन के बुलबुलों' के निर्माण पर कार्य किया।

रमन बाबू ने एक ओर नवीन अनुसन्धान किए तो दूसरी ओर पहले के अनुसन्धानों में संशोधन कर उन्हें पूर्णता प्रदान की। वैज्ञानिक जगत ने उनके कार्यों को सहर्ष स्वीकार किया। उनका महत्त्वपूर्ण आविष्कार 'रमण किरण' माना जाता है। जो सन् 1928 में 28 फरवरी को पूर्ण किया। तभी से 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाता है।

इस आविष्कार से उन्होंने सिद्ध किया कि जब अणु प्रकाश को बिखेरते हैं तो उस समय मूल प्रकाश में परिवर्तन हो जाता है। नवीन किरणों की उपस्थिति से हम परिवर्तन देख सकते हैं। प्रकाश की जो किरणें दीख पड़ी वे 'रमण प्रभाव' अथवा 'रमण किरणें' कहलायीं। यह उनका सर्वश्रेष्ठ आविष्कार है। इस आविष्कार के उपलक्ष्य में उन्हें विश्व का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार 'नोबेल– पुरस्कार' सन् 1930 में प्रदान कर सम्मनित किया गया। कहते हैं, उन्होंने अपनी इस खोज के लिए उपकरणों पर मात्र 200 रुपये खर्च किए थे। रमण प्रभाव ने क्वांटम सिद्धान्त को मजबूत सम्बल प्रदान किया।

1960 में रमन बाबू ने एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण खोज की। उन्होंने आँख के रेटिना (काला भाग) को देखने के लिए आप थैलोमोस्कोप नामक यन्त्र बनाया। यह यन्त्र वैज्ञानिक हैलमोल्तज के यन्त्र से अनोखा है। इससे आँख के अन्दर की रचना और प्रक्रिया को बड़ी सरलता से देखा जा सकता है, यही नहीं, रमन ने रेटिना में तीन रंगों की खोज की है। उन्होंने इन रंगों के कार्य, उनके प्रभाव और पहचान का भी पता लगाया है। उन्होंने राष्ट्रीय भौतिक प्रयोगशाला बंगलौर में कण–विज्ञान (क्रिस्टैलियोग्राफी) पर अनुसन्धान कार्य किया।

इस भारतीय वैज्ञानिक की प्रतिभा का लोहा मानकर देश–विदेश की अनेक संस्थाओं ने उनका सम्मान किया। सन् 1928 में इटालियन सोसाइटी रोम ने मैथ्यूसी नामक स्वर्ण पदक से सम्मानित किया। सन् 1929 में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें 'सर' की उपाधि प्रदान की। अनेक विश्वविद्यालयों ने अपना फैलो बनाकर उनका सम्मान किया। इस प्रकार रमन बाबू ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की।

इस प्रकार विश्व के समस्त देशों द्वारा उनको सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया। उन्होंने कहा था– 'सम्मान, प्रशस्तियां, पुरस्कार–ये सब एक सच्चे वैज्ञानिक के जीवन की आकस्मिक घटनाएँ हैं और उसे इनकी लेशमात्र भी आकांक्षा नहीं होती। मेरा लक्ष्य तो केवल अपने कार्य के प्रति निष्ठा है।

डॉ0 रमन ने भारत में वैज्ञानिक एवं अनुसन्धान हेतु सदैव प्रोत्साहन के प्रयास किए। उनके प्रयत्नों से देश में अनेक स्वतन्त्र अनुसन्धानशालाएँ, विश्वविद्यालय और वैज्ञानिक संस्थाएँ स्थापित हुईं।

डॉ0 रमन विज्ञान का प्रयोग युद्धक्षेत्र में करने के पक्ष में नहीं थे। वे विज्ञान का प्रयोग शान्ति कार्यों एवं जनकल्याण हेतु ही उचित समझते थे। वे नहीं चाहते थे कि वैज्ञानिक ऐसा प्रयोग करें जो विश्व शान्ति में बाधक हों। उनके इस शान्ति पूर्ण लक्ष्य के कारण ही इनको सन् 1958 में 'लेनिन शान्ति पुरस्कार' से सम्मनित किया गया।

डॉ0 रमन बाबू 80 वर्ष की आयु में भी तरुण तपस्वी की भाँति वैज्ञानिक अनुसन्धानों में लीन रहते थे। भारत में प्लेग का प्रकोप होने पर उन्होंने अपने निवास स्थान के सामने तम्बू लगवा दिए थे और वहाँ आने वाले रोगियों की स्वयं सेवा–सुश्रूषा और औषधि का प्रबन्ध किया।

डॉ0 रमन बहुत न्यायप्रिय भी थे। जब वे अकाउण्टेण्ट जनरल थे, तब एक व्यक्ति सौ–सौ के अधजले नोटों का बण्डल लाया जिनके नम्बर विकृत होने से कठिनाई से पढ़े जा सकते थे। उन्होंने स्वयं उनके नम्बर पढ़कर उसे रुपये दिला दिए। वे जाली सिक्के और नोट बनाने वालों को उचित दण्ड भी दिलाते थे।

डॉ0 रमन प्रत्येक कार्य को शीघ्रता से करते थे। वे विज्ञान के साथ–साथ अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, राजनीति, इतिहास और संस्कृत के भी मर्मज्ञ थे। उनमें ज्ञान पिपासा सदैव विद्यमान रही।

आठ भाषाओं के ज्ञाता और वीणावादन में प्रवीण, पद पुरस्कार और सम्मान की प्राप्ति पर भी विचलित न होने वाले डॉक्टर चन्द्रशेखर वेंकट रमन का स्वर्गवास 21 नवम्बर, सन् 1970 को हुआ। उनके व्यक्तित्व का मूल्यांकन करते हुए प्रतीत होता है कि रमन का व्यक्तित्व जितना महान् है, उतना ही सादा। रमन कोट, पैंट, टाई के साथ सिर पर दक्षिण भारतीय पद्धति की पगड़ी धारण करते थे। वे सही अर्थों में राष्ट्रवादी महापुरुष थे।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. डॉ0सी.वी. रमन का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
2. रमन के माता–पिता का नाम क्या था ?
3. रमन बाबू किस संस्था के उपसभापति थे ?
4. डॉ0 रमन की प्रथम विदेश यात्रा कब और कहाँ हुई ?
5. डॉ0 रमन के विशेष वैज्ञानिक अविष्कार का क्या नाम है ?

भावात्मक प्रश्न

6. सी.वी. रमन की विज्ञान में रुचि होने का क्या प्रभाव हुआ ?
7. डॉ0 रमन ने अपने जीवन का लक्ष्य क्या बताया ?
8. सी.वी.रमन प्रकृति के रंगों के अध्ययन एवं विश्लेषण में किस प्रकार लीन रहे ?
9. डॉ0 रमन ने किस प्रकार की संस्थाओं को स्थापित करने के प्रयास किए ?
10. विज्ञान का प्रयोग करने के विषय में डॉ0 सी.वी.रमन के क्या विचार थे ?

क्रियात्मक

1. अध्यापक की सहायता से रमन के शोधकार्यों की जानकारी प्राप्त करें।
2. पुस्तकों की सहायता से अन्य वैज्ञानिकों के बारे में ज्ञान प्राप्त करें।
3. भारतीय वैज्ञानिकों के चित्रों का संग्रह कीजिए।
4. रमन आविष्कारों की सूची बनाएँ तथा डॉ0 रमन को मिले पुरस्कारों और सम्मानों की सूची बनाएँ।

पाठ 8

अहिंसा के उपासक

भगवान् महावीर

जैन धर्म में 24 तीर्थंकर माने गए हैं। ऋषभ देव आदि तीर्थंकर कहलाते हैं। ऋषभ देव के बाद तेईस तीर्थंकर हुए। सभी तीर्थंकरों ने क्षत्रिय कुल में जन्म लिया। अधिकांश तीर्थंकरों का जन्म इक्ष्वाकुवंश में हुआ और सम्मेद शिखर पर उन्होंने निर्वाण प्राप्त किया।

जैन विचारधारा को व्यापक बनाने का श्रेय भगवान् महावीर स्वामी को है। इसलिए इन्हें जैन धर्म का संस्थापक भी कहा जाता है। इनका मूल नाम वर्धमान था। प्राकृतिक सुषमा से भरपूर विदेह जनपद की राजधानी वैशाली के पास कुण्डलपुर में 540 ईशापूर्व चैत्रशुक्ल त्रयोदशी को इनका जन्म हुआ। लिच्छवी शासक चेटक की बहन त्रिशला महावीर की माता थी। महावीर के माता–पिता श्रमणोपासक थे और पार्श्वनाथ के अनुयायी थे।

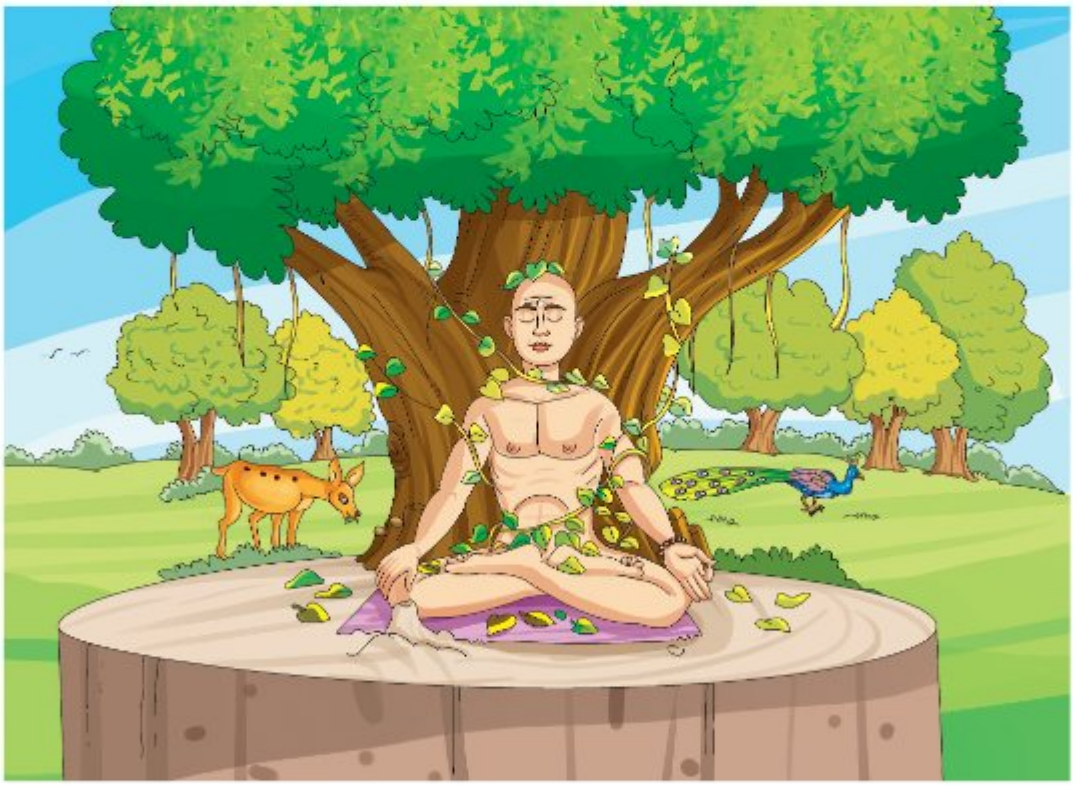

बड़े लाड़ प्यार से वर्धमान का लालन–पालन होने लगा। सुरक्षित चम्पक वृक्ष की भाँति वे बढ़ने लगे। वर्धमान बचपन से ही बड़े वीर, धीर और गम्भीर प्रकृति के थे। एक बार वे अपने साथियों के साथ खेल रहे थे। इतने में एक भयंकर साँप दिखाई दिया जो वृक्ष की जड़ में लिपटा हुआ फुंकार मार रहा था। साँप को देखकर वर्धमान के अन्य सभी साथी वहाँ से भाग खड़े हुए जबकि वर्धमान अविचल भाव से वहीं डटे रहे। उन्होंने सर्प को हाथ में लेकर दूर फेंक दिया। मतलब यह कि वर्धमान बचपन से ही निर्भीक प्रकृति के थे और कोई भी संकट उपस्थित हो जाने पर बड़े धैर्य से काम लेना जानते थे। इन्हीं सब कारणों से वे महावीर नाम से सुविख्यात हो गए।

वर्धमान ने युवावस्था में प्रवेश किया। वर्धमान एक प्रभावशाली प्रियदर्शी युवक थे। तपाये हुए उत्तम सोने जैसी उनके शरीर की शोभा निराली थी। उनका ललाट, उनकी आँख, नाक, कान और कपोल अत्यन्त सुडौल थे, मानो किसी साँचे में ढलकर आये हों।

अपने लाड़ले बेटे को जवानी मे पदार्पण करते देख माता–पिता की खुशी का ठिकाना न रहा। कितने आनन्द के दिन होंगे जब वर्धमान गृहस्थाश्रम में प्रवेश करेंगे, ये विचार वर्धमान के माता–पिता के मन में आनन्द का सागर उड़ेल देते।

वर्धमान के गुणों की ख्याति दूर–दूर तक फैल गयी। विवाह के प्रस्ताव आने लगे। सिद्धार्थ प्रस्तावों पर विचार करने लगे। लेकिन वर्धमान की सहमति के बिना कोई निर्णय कैसे लिया जाए ? जबकि वर्धमान तो गृहस्थाश्रम में न पड़ने का विचार बहुत पहले से कर चुके थे, किन्तु माता त्रिशला की भावनाओं की उपेक्षा भी कैसे की जा सकती थी ? आखिर माता के स्नेह के सामने उन्हें झुकना पड़ा। इच्छा न रहते हुए भी वर्धमान ने विवाह की स्वीकृति दे दी। कलिंग देश के राजा जितशत्रु की कन्या यशोदा से वर्धमान का विवाह हो गया। उनके प्रियदर्शना नाम की एक कन्या भी हुई जिसका विवाह उसी नगर के क्षत्रिय कुमार जामालि के साथ हो गया।

गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी संसार की मोह–माया वर्धमान को आकर्षित न कर सकी। ऐसे नाजुक समय में संसार की मोह ममता त्याग कर दीक्षा–ग्रहण करने की उत्कट इच्छा महावीर को उद्वेलित कर रही थी।

महावीर जब 28 वर्ष के थे, उनके माता–पिता स्वर्ग सिधार गए । इससे उनके जीवन–काल में दीक्षा न लेने की प्रतिज्ञा से वे मुक्त हो गए। अतएव उन्होंने अपने बड़े भाई नन्दीवर्धन के समक्ष दीक्षा का प्रस्ताव रखा। किन्तु उन्होने भी दीक्षा की अनुमति नहीं दी। उन्होने कहा– ''श्रमण– निर्ग्रन्थों के तप और व्रत नियमों का पालन करना महाकठिन है। बड़े–बड़े तपस्वियों के आसन डोल जाते हैं।'' यद्यपि महावीर जीवन की असारता से भलीभाँति परिचित थे, फिर भी उन्होंने अपने बड़े भाई की आज्ञा को शिरोधार्य कर जैसे– तैसे करके दो वर्ष– व्यतीत किए।

एक दिन उनके मन में जनहित की प्रबल भावना जाग उठी। अब की बार गृह–त्याग का उन्होंने निश्चय कर लिया। बहुत समझाने– बुझाने पर भी जब वे टस से मस नहीं हुए तो निष्क्रमण की तैयारी हुई। अगहन वदी दशमी का शुभ दिन था (आग्रहायण कृष्ण पक्ष दशमी)। उद्यान में पहुँचकर वर्धमान जय–जयकार की घोषणा के बीच पालकी से उतरे। शरीर के वस्त्राभूषण उतार डाले। पंचमुष्टि से अपने केशों का लोंच किया। कुलवृद्धा ने उन्हें एक उत्तम रेशमी वस्त्र में ले लिया। कुलवृद्धा तथा अन्य कुटुम्बीजनों की भर्राई हुई आवाज सुनायी दी–''बेटा! प्रयत्नपूर्वक संयम को पालना, अपने व्रत और नियमों में अडिग रहना, क्षण–भर के लिए भी प्रमाद नही करना।''

महावीर ने अब एक नए जीवन में प्रवेश किया था। पुराने संगी–साथी छूट गए थे। सगे सम्बन्धियों का स्नेह पुराना पड़ गया था। अब तो किसी का भी मोह शेष नही रह गया। किसी बात की चिन्ता नहीं, दुविधा नहीं– बेफिक्री ही बेफिक्री है। ऐसा अनमोल अवसर कब– मिलेगा ? उन्होंने दृढ़ निश्चय किया कि कितनी ही विघ्न बाधाओं का सामना क्यों न करना पड़े, कितने ही संकट क्यों न आयें, अपने ध्येय से वे नहीं डिगेंगे, पीछे नहीं हटेंगे। इसी दृढ़ संकल्प से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होते हुए 12 वर्षों की कठोर तपस्या के बाद वैशाख शुक्ल दशमी को ऋजुकुला नदी के तट पर जम्भिका (जमुई) में दिव्य ज्ञान हुआ। कर्म का फल अवश्य ही मिलता है क्योंकि पुरुषार्थ से सिद्धि अवश्य होती है। तपस्वी के मन की साध पूरी हुई। ज्ञान चक्षु खुल गए। ज्ञान की यह चरम अवस्था थी। ''अब वे अवश्य ही दूसरों के लिए कुछ कर सकेंगे'' उनके मन में एक लहर उठी। कैवल्य ज्ञान प्राप्त होने के पश्चात् महावीर स्वामी ने जन कल्याण हेतु अपनी शिक्षाओं को सहज और सरल ढंग से जन–जन तक पहुँचाया और पूरी मानव जाति का उद्धार किया। साथ ही 'तीर्थंकर' शब्द को भी सार्थक कर दिया क्योंकि तीर्थंकर शब्द का अर्थ है – ऐसा महापुरुष जो लोगों को संसार सागर से पार उतार सके। वे अपनी इन्द्रियों को जीतने के कारण जैन कहलाए।

महावीर स्वामी की प्रमुख शिक्षाएँ निम्नलिखित हैं–

1. **अहिंसा** – जैन धर्म की शिक्षाओं का केन्द्रबिन्दु अहिंसा का सिद्धान्त है। जैन मत के अनुसार सम्पूर्ण विश्व प्राणवान् है अर्थात् पेड़–पौधे, मनुष्य, पशु, पक्षियों सहित पत्थर और पहाड़ों में भी जीवन है। अतः किसी भी प्राणी या निर्जीव वस्तु को हानि नहीं पहुँचानी चाहिए। यही अहिंसा है। इस का मन, वचन और कर्म तीनों रूपों में पालन करना चाहिए।

2. **तीन आदर्श वाक्य–** *1. सत्य विश्वास* *2. सत्य ज्ञान* *3. सत्य चरित्र*

3. **पाँच महाव्रत–** *1. अहिंसा का पालन* *2. चोरी न करना* *3. झूठ न बोलना* *4. धनसंग्रह न करना* *5. ब्रह्मचर्य का पालन करना*

4. **कठोर तपस्या–** जैन धर्म में मोक्ष प्राप्ति के लिए और पिछले जन्मों के बुरे कर्मों के फल को समाप्त करने के लिए कठोर तप पर बल दिया।

इस प्रकार मानवोपयोगी शिक्षाओं से संसार को कृतार्थ कर 72 वर्ष की आयु में महावीर स्वामी ने कार्तिक कृष्ण अमावस्या को पावापुरी (बिहार) में मोक्ष (कैवल्य) प्राप्त किया।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. जैन धर्म में कुल कितने तीर्थंकर हुए हैं? उनमें से पहला तीर्थंकर कौन था ?
2. जैन धर्म का वास्तविक संस्थापक कौन माना जाता है ?
3. महावीर स्वामी का मूल नाम क्या था ?
4. वर्धमान का जन्म कब और कहाँ हुआ था ?
5. दीक्षा लेने के विषय में महावीर की क्या प्रतिज्ञा थी ?

भावात्मक प्रश्न

1. वर्धमान द्वारा अपने बड़े भाई नन्दीवर्धन के समक्ष दीक्षा का प्रस्ताव रखने पर उनकी क्या प्रतिक्रिया थी ?
2. कौन से प्रसंग से वर्धमान की निर्भीकता स्पष्ट झलकती है ?
3. वर्धमान को कब, कहाँ और कितने वर्षों बाद दिव्यज्ञान प्राप्त हुआ ?
4. जैन धर्म के पाँच महाव्रत क्या हैं ?
5. जैन धर्म के आदर्श वाक्य बताइए ।

क्रियात्मक

1. शिक्षक छात्रों में नैतिक मूल्यों के विकास हेतु पाँच महाव्रतों से सम्बन्धित विभिन्न कहानियाँ कक्षा में सुनाएँ और विद्यार्थियों से उन पर चर्चा करें।
2. अध्यापक महावीर स्वामी के जीवन से सम्बन्धित अन्य पहलुओं पर भी विस्तार से कक्षा में चर्चा करें।
3. छात्र पुस्तकालय से जैन धर्म सम्बन्धी पुस्तकें लेकर पढ़ें।

पाठ 9

प्रेरक व्यक्तित्व

वीर सावरकर

10 जुलाई, 1910 सूर्योदय का समय। मोरिया नामक जहाज यान्त्रिक गड़बड़ी होने के कारण बन्दरगाह पर खड़ा था। कारीगर उसे दुरुस्त करने में लगे थे। एक प्रवासी युवक विचारमग्न था। निश्चिन्त रहना उसके लिए नामुमकिन था क्योंकि वह अंग्रेजों के बन्धन में था। दो पहरेदार लगातर उस पर नजर रखे हुए थे।

"मुझे शौच के लिए जाना है", बन्दी ने पहरेदार से कहा। पहरेदार उसे जहाज के शौचकूप में ले गया। शौचकूप में ऊपर शीशा लगा हुआ था। पहरेदार उस शीशे में से उस पर नजर रखे थे। उस बन्दी ने अपना ओवरकोट ऊपर खिड़की पर लगे शीशे पर रख दिया ताकि पहरेदार उसे देख न सके। बन्दी वहाँ के पोर्ट होल से बाहर निकला, समुद्र में कूदा और तैरकर किनारे पर पहुँच गया। शौचालय के बाहर खड़े पहरेदार ने सोचा कि काफी समय हो गया है, वह अभी तक बाहर नहीं आया, कुछ तो गड़बड़ है। पहरेदार ने जहाज के ऊपर चढ़कर देखा कि युवक समुद्र में कूद गया था। वह शोर मचाने लगा। "बन्दी भाग रहा है, पकड़ो–पकड़ो।" तभी सारे जहाज में शोर मच गया। भागनेवाले बन्दी का नाम था "सावरकर", इस सारी घटना का वृत्तान्त दूसरे दिन समाचार–पत्रों में छप गया। दुनियाभर के लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ ।

महाराष्ट्र के नासिक जिले के भंगुर नामक गाँव में 28 फरवरी, 1883 को पन्त सावरकर के घर में एक बालक का जन्म हुआ। उसका नाम विनायक रखा गया। विनायक के बड़े भाई का नाम गणेश था। विनायक जब 9 वर्ष के थे तब उनकी माता का निधन हो गया। उन्होंने नासिक में शिक्षा ग्रहण की।

सन् 1897 में महारानी विक्टोरिया ने ध्वजारोहण उत्सव को सम्पूर्ण भारत में मनाने का निश्चय किया। महाराष्ट्र में प्लेग की बीमारी फैली होने के कारण उत्सव मनाने के निर्णय को सुनकर जनता भड़क उठी। इसका प्रभाव चाफेकर बन्धुओं पर पड़ा और उन्होंने दो अंग्रेजों को मार दिया। अंग्रेजों ने चाफेकर को फाँसी पर चढ़ा दिया। इस बलिदान की अमिट छाप सावरकर बन्धुओं पर पड़ी। दोनों ने नासिक में 'मित्र मेला' नामक संगठन के द्वारा भारतीयों को स्वतन्त्रता संघर्ष के लिए प्रेरित किया। वे पढ़ाई के साथ–साथ स्वतन्त्रता की अलख जगाने के लिए संघर्ष करते रहे।

नासिक उत्सव के बाद भारत सरकार ने बंगाल का विभाजन कर दिया। भारतीय क्रान्तिकारियों ने विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया। विनायक ने भी विदेशी वस्त्रों की होली जलाई, जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें विद्यालय से निष्कासित कर दिया गया, फिर भी उन्होंने मित्रों की सहायता से शिक्षा को जारी रखा। अन्तिम परीक्षा उन्होंने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

लन्दन का 'इण्डिया हाउस' भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम को प्रोत्साहित करने वाली संस्था थी। यह बुद्धिमान् विद्यार्थियों को छात्रवृत्तियाँ प्रदान करती थी। इसके लिए सावरकर ने प्रार्थना–पत्र दिया, जो स्वीकार कर लिया गया। अतः सावरकर 1906 में शिक्षा–प्राप्ति के लिए लन्दन चले गए।

उन्होंने स्वतन्त्रता की भावना को जागृत करने के लिए '1857 की क्रान्ति' नामक पुस्तक लिखी। सावरकर पुस्तक छपाई का प्रयास करने लगे लेकिन सफल नहीं हुए। पुस्तक की प्रतियाँ गुप्तरूप से भारत में भेजी जाने लगी। इस सम्बन्ध में सावरकर पर मुकदमा चलाया गया और उन्हें कारावास की सजा सुनाई।

भाभी के पत्र से सावरकर को बाबाराव के पकड़े जाने व काले पानी की सजा की जानकारी प्राप्त हुई, जिससे भारतीय आग–बबूला हो गए। लन्दन में मदनलाल ढींगरा ने इसका बदला लेने का निश्चय किया। हलचल पर निगाह रखने वाले अंग्रेज अधिकारी को गोली से उड़ा दिया जिसके परिणाम स्वरूप मदललाल ढींगरा को फाँसी दी गई। अंग्रेज सरकार ने अनेक कार्यकत्ताओं को पकड़ लिया। सरकार समझ गई कि इन सबके पीछे सावरकर का हाथ है। अतः अंग्रेज सरकार ने सावरकर पर मुकदमा दायर कर दिया।

भाई बाबाराव को अण्डमान के कारावास में भेज दिया गया। इस कारण सावरकर की लन्दन में रहने की इच्छा नहीं रही। विपरीत परिस्थितियों में भी बैरिस्टर की परीक्षा में सफल रहे। जब ये भारत लौट रहे थे तब लन्दन के विक्टोरिया स्टेशन पर इन्हें पकड़ लिया गया और अंग्रेज अधिकारी की हत्या का आरोप लगा दिया गया।

मेरिया जहाज में बन्दी होने पर वे समुद्र में कूद पड़े और तैरकर फ्राँस के भू–भाग पर पहुँच गए। वहाँ पहरेदारों द्वारा उन्हें पकड़ लिया गया। भारत में सावरकर पर मुकदमा चला और उनपर आरोप लगाए गए कि ये लोगों को भड़काकर अंग्रेजों की हत्या करवाते हैं। इन अरोपों के तहत जब दो आजन्म कारावास की सजा सुनाई गई तब सावरकर ने कहा– "ओह! अंग्रेजों को भी हिन्दुओं की पूर्वजन्म की कल्पना मान्य है। दो आजन्म कारावास की सजा सुनाना ही इसका प्रमाण है।"

सावरकर को एक दिन कारावास में अपने बड़े भाई के दर्शन हुए लेकिन वे आपस में बोल नहीं सकते थे। उन्होंने पहरेदार की सहायता से चिट्ठी भेजी और सावरकर ने हाथों की हथकड़ियों को टकराकर एक सांकेतिक भाषा मे बोलने का आभास करवाया। यही भाषा सभी कैदियों को मुक्त कराने की माध्यम बनी।

सावरकर का सभी कैदियों के प्रति सद्–व्यवहार था। सावरकर जन्मजात कवि थे। कारावास में रहते हुए भी उन्होंने काव्यों की रचना की। काव्यरचना लोहे की कील से दीवार पर लिखकर कण्ठस्थ करते थे। उन्होंने अनेक काव्यों की रचना की यथा–कमला, महासागर आदि।

सन् 1919 में सावरकर से मिलने के लिए उसके छोटे भाई तथा उसकी पत्नी आए। सावरकर को मुक्त कराने के लिए चारों ओर से दबाव आने लगे और अन्त में अंग्रेज सरकार को झुकना पड़ा। 1921 में बाबाराव को मुक्त किया गया तथा सावरकर को भारत लाया गया और 1922 में इन्हें मुक्त कर दिया गया। लेकिन जिले से बाहर जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। 1924 से 1938 तक ये रत्नागिरि जिले में बन्दी रहे। उनकी पत्नी यमुनाबाई भी इनके साथ रही। उनके प्रभात नामक कन्या तथा विश्वास नाम का पुत्र हुआ। सावरकर का विवाह 1901 में हो गया था लेकिन लगभग 23 वर्ष तक इन्होंने अकेले जीवन व्यतीत किया।

सरकार की अनुमति से वे वापिस नासिक आ गए। वहाँ जनता ने उन्हें एक लाख रुपए भेंट किए। समाज–सेवा में उन्होंने तन–मन–धन अर्पण कर दिया। उन्होंने रत्नागिरि में पतितपावन मन्दिर की स्थापना की और उसका उद्घाटन शंकराचार्य द्वारा करवाया। सभी भेदभाव को भुलाकर लोग एक जगह बैठकर भोजन कर सकें, इसके लिए सहभोज कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

1937 में सावरकर पर लगे प्रतिबन्ध हटने पर वे राजनीति में कूद पड़े। उन्हें हिन्दू महासभा का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। सावरकर के अनुयायियों ने 1960 में मृत्युंजय दिवस मनाया और उनको जेल में जहाँ रखा गया था, वहाँ 'स्मरण फलक' लगवाकर उसे राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया गया। 1965 में सावरकर को ''अप्रतिम स्वातन्त्र्य वीर'' के सम्मान से नवाजा गया।

उन्होंने 'भारतीय इतिहास के छः स्वर्णिम पृष्ठ' नामक बृहद् ऐतिहासिक ग्रन्थ लिखा। इसके द्वारा भारतीयों में स्वाभिमान जागृत करने का प्रयास किया। 26 फरवरी, 1966 को इनका देहावसान हो गया। इन्होंने गृहस्थ जीवन की अपेक्षा स्वतन्त्रता प्राप्ति को सर्वोपरि माना और अन्त समय तक उसकी रक्षा के लिए प्रयासरत रहे।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. वीर सावरकर का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
2. सावरकर और उनके बड़े भाई का नाम बताइए।
3. अनुकूल परिस्थितियों के न होने पर भी सावरकर ने अन्तिम परीक्षा मे कौन–सा स्थान प्राप्त किया ?
4. वीर सावरकर मेरिया नामक जहाज से किस प्रकार बच निकले?
5. वीर सावरकर ने कौन–कौन सी पुस्तकें लिखीं ?

भावात्मक प्रश्न

1. वीर सावरकर जन्मजात कवि थे। टिप्पणी कीजिए।
2. 'भारतीय इतिहास के छः स्वर्णिम पृष्ठ' पुस्तक का भारतीयों पर क्या प्रभाव पड़ा ?
3. सावरकर की मन्दिर निर्माण के पीछे क्या भावना थी ?
4. वीर सावरकर ने स्वतन्त्रता प्राप्ति को सर्वोपरि कैसे माना ?
5. सन् 1965 में सावरकर को कौन–से सम्मान से नवाजा गया ?

क्रियात्मक

1. छात्र विदेश में रहकर आजादी की ज्वाला प्रज्वलित करने वाले वीरों के बारे में जानकारी प्राप्त करें।
2. छात्र अध्यापक की सहायता से पता लगाएँ कि काले–पानी की सजा वीर सावरकर के अतिरिक्त अन्य किन वीरों को सुनाई गई थी ?
3. छात्र भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के विषय में पुस्तकालय से पुस्तक लेकर पढ़ें और उसका सार लिखें।

पाठ 10 वैदिक धर्म का स्वरूप

वैदिक धर्म अपने नाम से ही अपनी उत्पत्ति का बोध करवाता है। वैदिक अर्थात् वेदों से निकला हुआ। वेद समस्त ज्ञान का स्रोत हैं। वेद सभी धर्मों का मूल भी हैं। मनु कहते हैं 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'। मानव का सम्पूर्ण जीवन वैदिक धर्म के शाश्वत मूल्यों से ओत–प्रोत है। सभी मानवीय मूल्य इसमें प्राप्त होते हैं। इसके स्वरूप को समझने के लिए धर्म का स्वरूप समझना अनिवार्य है। धर्म का अर्थ है धारण करना। मनु धर्म की व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि जो जीवन में धारण किया जाए उसे धर्म कहते हैं।

धारणाद् धर्ममित्याहुः धर्मो धारयते प्रजा।
यत् स्याद् धारणसंयुक्तं, स धर्म इति निश्चयः ।। मनुस्मृति

दया, सहिष्णुता, क्षमा, सत्य, न्याय, सेवा, सदाचार, इन्द्रिय संयम, कर्त्तव्य पालन, निष्ठा आदि गुणों को जीवन में धारण करना ही धर्म है। धर्म का दूसरा नाम कर्त्तव्य है। जो व्यक्ति अपने जीवन में कर्त्तव्यों का पूर्णरूप से पालन करता है, वही धार्मिक होता है। इन सभी गुणों को धारण करना ही धर्म है। वैदिक धर्म इन्हीं शाश्वत मूल्यों का वर्णन करता है। वेदों में एक ही ईश्वर का वर्णन किया गया है। वेद कहता है विद्वान् एक ईश्वर की अनेक प्रकार से व्याख्या करते हैं। 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति'।

ईश्वर को गुण, कर्म, स्वभावानुसार अनेक नामों से पुकारा जाता है। यथा–ब्रह्मा, विष्णु, महेश इस विषय में उपनिषद् का कहना है कि वह एक है, एक है, एक है। सभी देव इसमें आकर मिल जाते हैं।

स एषः एक एव, एक एव, एक एव। सर्वे अस्मिन् देवा एकवृता भवन्ति।

वेदानुसार ईश्वर की सत्ता सार्वभौम है। संसार में जो भी जड़ और चेतन पदार्थ हैं, उन सब में ईश्वर व्यापक है, अतः उसके द्वारा दिये गये भोग्य पदार्थों का हमें त्याग भावना से उपभोग करना चाहिए न कि अपनी सम्पत्ति समझ कर। निष्काम भावना से कर्म करने पर हम जन्म–मरण के चक्कर से मुक्त हो जाते हैं। किसी के धन का लालच नहीं करना चाहिए। यदि इस ईश्वरीय आदेश को प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में धारण करें तो परस्पर के झगड़े दंगे फसाद होने की सम्भावना कहीं पर भी नहीं बनेगी। सब प्रेमभाव से मिल–जुलकर रहेंगे। साथ चलना, एकमत होकर बोलना, मिलकर परस्पर कर्त्तव्यों का पालन करना, सभा समितियों में अपने वैमनस्य भुलाकर विचार–विमर्श करना, प्रेम पूर्वक व्यवहार कर आगे बढ़ना, संगठन में रहना आदि इस धर्म का मूल मन्त्र है।

विश्व को पंचशील का सिद्धान्त इसी धर्म की देन है। यहाँ सबकी मंगल कामना की जाती है। किसी से कोई भेदभाव नहीं किया जाता। सब सुखी हों, नीरोग हों, सब भद्रभाव देखें, कोई भी प्राणी दुःखी न हो यह प्रार्थना वैदिक धर्म का प्राण है। वैदिक धर्म का एक और महत्त्वपूर्ण सन्देश निष्काम कर्म है। इस विषय में वेद कहता है कि मानव निष्काम कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करे। यही मार्ग उसे आगे ले जायेगा।

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ।। यजुर्वेद

इससे भिन्न मार्ग पर चलने से तू कर्मफल के चक्कर में पड़कर दुनिया रूपी भँवर में डूब जायेगा। कर्म की महिमा अनन्त है, इसके बिना जीवन सम्भव नहीं है। गीता में कर्म को प्रधान माना गया है।

भगवान् श्रीकृष्ण कहते है– हे अर्जुन! तेरा केवल कर्म करने का अधिकार है इसलिए तू फल की चिन्ता मत कर। तू कर्म को फल का कारण मत समझ जिससे तेरी आसक्ति कर्म के छोड़ने में न हो।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफल हेतुर्भूर्माते संगोऽस्त्वकर्मणि ।।

गीता में वैदिक धर्म के अमूल्य विचार रत्न सरल शब्दों में पिरोये गये है। वर्तमान भारतीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को श्रीमद्भगवद्गीता की प्रति भेंट करते हुए कहा कि 'मै भारत से आपके लिए सर्वश्रेष्ठ मूल्यवान् धरोहर लेकर आया हूँ। इससे अधिक मूल्यवान् भारत की ओर से आपको देने के लिए मेरे पास कुछ भी नहीं है।'

वैदिक धर्म की धरोहर उपनिषद्, ब्राह्मणग्रन्थ, आरण्यक आदि ग्रन्थ अमूल्य विचार रत्नों से भरे पड़े हैं। जीवन को सरल और सुचारु ढंग से जीने के लिए धन अति–आवश्यक है, विशेषरूप से गृहस्थी के लिए। अतः वेद धन कमाने का भी आदेश देता है किन्तु शुचिता के साथ। धन कमाकर उसका उपभोग अकेले न करें। हम मिल कर खायें। इस विषय को बड़े सुन्दर वचनों में कहा गया है 'सौ हाथों से कमाओ और हजार हाथों से बाँट दो'।

शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिरः।

वैदिक धर्म सबको साथ लेकर चलता है। कोई भी गरीब भूखा न रहे, अतः दान को जीवन में सम्मिलित किया गया है। उसका महत्त्व बतलाते हुए कहा गया है – "दान करने वाले अमृत को प्राप्त करते हैं। दान करने वाले दीर्घायु प्राप्त करते हैं। किया हुआ कर्म और दिया हुआ दान कभी व्यर्थ नहीं जाता। दान से ही समाज के लिए कल्याणकारी योजनायें चलाई जाती हैं, जिससे समाज के निम्न वर्ग को ऊपर उठाया जा सके। यहाँ सुगठित सामाजिक संरचना में आश्रम व्यवस्था को महत्त्व दिया गया है। सब आश्रमों के अलग–अलग कर्त्तव्य निश्चित किये गये हैं। ब्रह्मचर्याश्रम जीवन की नींव है, इसमें ब्रह्मचारी के लिए पालनीय कर्तव्य हैं–अध्ययन, तपश्चर्या, योग, गुरु सेवा आदि से जीवन को सुसंस्कृत बनाना। गृहस्थाश्रम में गृहस्थों के कर्तव्य हैं सन्तानोत्पत्ति, सभी आश्रमों का भरण–पोषण, सामाजिक उत्थान का दायित्व, धन कमाना, आदि।

गृहस्थ आश्रम में पारिवारिक परस्पर प्रेम की परिकल्पना की गई है यथा भाई, भाई से द्वेष न करे, बहन, बहन से द्वेष न करे।

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन् मा स्वसारमुत स्वसा।।

वेद परिवार में सब मिलकर प्रेम से रहें। परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई होती है, यदि परिवार सुखी रहेगा तो समाज भी सुखी, समृद्ध और खुशहाल रहेगा, तभी गृहस्थी का कर्त्तव्य पूर्ण होगा।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।।

गृहस्थ आश्रम के पश्चात् वानप्रस्थ आश्रम होता है। स्वाध्याय करना, गृहत्याग कर तपश्चर्या करना, समाजोत्थान के लिए कार्य करना आदि वानप्रस्थ आश्रम के करने योग्य कर्म हैं। संन्यासी का सम्पूर्ण जीवन समाज कल्याण के लिए है। इस प्रकार वेद एक संगठित सुसंस्कृत समाज की रचना का विचार देता है।

यदि सत्य–ध्वज के वाहक वैदिक धर्म को अपनाया जाये तो ऐसे समाज की रचना होगी जहाँ, गरीबी, भुखमरी, अनाचार, अशिक्षा, आतंक और व्यभिचार जैसे समाज को पतन की तरफ ले जाने वाले दुर्गुणों का कोई स्थान नहीं होगा। सर्वत्र ऐसे सच्चरित्र मानवों का समाज होगा जो रामायण काल की याद दिलाएंगे। राम जब खोई हुई सीता को ढूंढने निकलते हैं तब वन में उन्हें सीता के कुछ आभूषण प्राप्त होते हैं, जो रावण द्वारा अपहृत सीता ने पुष्पक विमान से गिराए गए थे। राम उन्हें लक्ष्मण को दिखाकर उनके द्वारा सीता के आभूषण होने की पुष्टि करना चाहते हैं, तब लक्ष्मण कहते हैं, मैं न तो बाजूबन्दों को पहचानता हूँ, न कुण्डलों को जानता हूँ, मैं तो नित्य ही उनकी चरणवन्दना करने के कारण नूपुरों (बिछुवे पैर की अंगुली में पहने जाने वाले आभूषण) को ही पहचानता हूँ।

नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुण्डले
नूपुरे त्वमिजानामि नित्यं पादाभिवन्दनात् ।। *रामायण*

इतने उच्च चरित्र की कल्पना हम वैदिक शिक्षाओं से ही प्राप्त कर सकते हैं। आओ एक बार फिर वेदों की शिक्षाओं, विचारों को धारण कर ऐसे ही श्रेष्ठ समाज का निर्माण करें, जहाँ लक्ष्मण जैसे आदर्श चरित्र वाले नागरिकों का निर्माण हो।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. धर्म की क्या परिभाषा है ?
2. यहाँ सबके लिए किसकी कामना की जाती है ?
3. वैदिक धर्म कैसे कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करने को कहता है ?

भावात्मक प्रश्न

1. समाज की सुगठित रचना के लिए किसे महत्त्व दिया गया है ?
2. लक्ष्मण के उच्च चरित्र पर टिप्पणी कीजिए।

क्रियात्मक

1. अध्यापक छात्रों को पाठ में आये विशेष प्रसंगों को गायन के रूप में लय सहित सिखाएँ।
2. अध्यापक सत्य, उच्च चरित्र, कर्त्तव्य पालन आदि गुणों को विकसित करने के लिए छात्रों से कोई कहानी या अनुभव सुने।
3. वैदिक धर्म में कौन–कौन सी विशेषताएँ हैं ? लेखन के माध्यम से कौशल विकास करवाएँ। अध्यापक द्वारा इसका तुलनात्मक विवेचन किया जाए।
4. परिवार में सुख–समृद्धि व प्रेम बढ़ाने के लिए कौन से उपाय हैं ? छात्रों के साथ अध्यापक इस विषय पर परिचर्चा करें।

पाठ 11 प्रेरक दोहे

दुःख में सुमिरन सब करें,
सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे,
दुःख काहे को होय ।। *कबीर*

साईं इतना दीजिए,
जा में कुटुम्ब समाए ।
मैं भी भूखा न रहूँ,
साधु न भूखा जाए ।। *कबीर*

काल करे सो आज कर,
आज करे सो अब ।
पल में प्रलय होएगी,
बहुरि करेगा कब ।। *कबीर*

रात गंवाई सोय के,
दिवस गंवायो खाय।
हीरा जनम अमोल था,
कौड़ी बदले जाय ।। *कबीर*

आछे दिन पाछे गए,
हरि से किया न हेत।
अब पछताए होत क्या,
जब चिड़िया चुग गई खेत ।। *कबीर*

राम नाम की लूट है, लूट सके तो लूट ।
फिर पाछे पछताओगे, प्राण जाहि जब छूट।। *कबीर*

माँगन मरण समान है, मति माँगो कोई भीख।
माँगन ते मरना भला, यह सतगुरू की सीख ।। *कबीर*

वे रहीम नर धन्य हैं, पर उपकारी अंग।
बाँटन वारे को लगे, ज्यों मेंहदी का रंग ।। *रहीम*
रहिमन विपदा हूँ भली, जो थोरे दिन होय।
हित–अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय।। *रहीम*
कहि रहीम संपति सगै, बनत बहुत बहु रीत।
विपति कसौटी जे कसै, ते ही साँचे मीत।। *रहीम*
जे गरीब पर हित करैं, ते रहीम बड़ लोग।
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग।। *रहीम*
रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना जुरे, जुरे गाँठ पड़ि जाय।। *रहीम*
कैसे छोटे नरनु तैं, सरत बड़नु को काम।
मद्यों दमामौ जात क्यों, कहि चूहे के चाम।। *बिहारी*
चटक न छाँड़त घटत हूँ, सज्जन नेह गँभीरु।
फीकौ परै न, बरु फटै, रँग्यो चोल रंग चीरु।। *बिहारी*
दुसह दुराज प्रजान में, क्यों न बढ़े दुख दन्द।
अधिक अँधेरो जग करै, मिलि मावस रवि चन्द।। *बिहारी*
कनक कनक तें सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाये बौरात है, या पाये बौराय।। *बिहारी*

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. सुख में स्मरण करने से क्या होता है ?
2. घर से भूखा कौन नहीं जाना चाहिए ?
3. हमें कार्य किस प्रकार करना चाहिए ?
4. किस विपदा को भला बताया गया है?
5. सज्जन स्नेह के बारे में कवि ने क्या कहा ?

मानात्मक प्रश्न

1. कवि ने मनुष्य के जन्म को कैसा बताया है ?
2. "आछे दिन पाछे गए" दोहे से कबीर जी क्या कहना चाहते हैं ?
3. सतगुरु की क्या सीख है ?
4. रहीम जी किस नर को धन्य मानते हैं ?
5. कनक–कनक से कवि का क्या भाव है ?

क्रियात्मक

1. पाठगत दोहों को स्मरण कर कक्षा में सुनाएँ ।
2. अध्यापक छात्रों को अन्य कवियों के शिक्षाप्रद दोहे याद करने के लिए कहें एवं स्वयं सुनाएँ।

पाठ 12 क्षमा और शक्ति

यह कविता राष्ट्र कवि रामधारी सिंह दिनकर के खण्डकाव्य 'कुरुक्षेत्र' के तृतीय सर्ग के तृतीय भाग से संकलित है। इसमें क्षमा के लिए शक्ति का होना आवश्यक है। महाकवि कालिदास ने अपने महाकाव्य रघुवंश में राजा दिलीप के गुणों का वर्णन करते हुए लिखा है क्षमा शक्तौ अर्थात् राजा दिलीप शक्तिमान होते हुए भी क्षमाशील थे। सबल द्वारा की गई क्षमा ही शोभा देती है। निर्बल क्या क्षमा करेगा। अतः व्यक्ति को शक्तिमान होने का प्रयास करना चाहिए और फिर क्षमाशील होना चाहिए। महाभारत की कथा को आधार बनाकर दिनकर जी ने कुरुक्षेत्र नामक खण्ड काव्य लिखा है।

क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल सबका लिया सहारा,
पर नर व्याघ्र, सुयोधन तुमसे कहो, कहाँ, कब हारा?
क्षमाशील हो रिपु–समक्ष तुम हुये विनत जितना ही,
दुष्ट कौरवों ने तुमको कायर समझा उतना ही।
अत्याचार सहन करने का कुफल यही होता है,
पौरुष का आतंक मनुज कोमल होकर खोता है।
क्षमा शोभती उस भुजंग को जिसके पास गरल हो,
उसको क्या जो दंतहीन विषरहित, विनीत, सरल हो।

तीन दिवस तक पंथ मांगते रघुपति सिन्धु किनारे,
बैठे पढ़ते रहे छन्द अनुनय के प्यारे–प्यारे।
उत्तर में जब एक नाद भी उठा नहीं सागर से,
उठी अधीर धधक पौरुष की आग राम के शर से।
सिन्धु देह धर त्राहि–त्राहि करता आ गिरा शरण में,
चरण पूज दासता ग्रहण की बँधा मूढ़ बन्धन में।
सच पूछो, तो शर में ही बसती है दीप्ति विनय की,
सन्धि–वचन सम्पूज्य उसी का जिसमें शक्ति विजय की।
सहनशीलता, क्षमा, दया को तभी पूजता जग है,
बल का दर्प चमकता उसके पीछे जब जगमग है।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. इस कविता के लेखक कवि का नाम लिखिए।
2. कौरवों ने पाण्डवों को कायर क्यों समझा ?
3. क्षमा किसे शोभा देती है ?
4. समुद्र ने आत्म रक्षा की प्रार्थना कब की थी ?
5. जग किसे पूँछता है ?

भावात्मक प्रश्न

1. महाभारत युद्ध में किस प्रकार व्यवहार करते थे ?
2. मनुष्य को अपना गौरव बढ़ाने के लिए कैसा व्यवहार करना चाहिए ?
3. अत्याचार सहने से क्या हानि होती है ?
4. श्री राम ने समुद्र से क्या चाहा था ?
5. इस कविता से क्या सन्देश प्राप्त होता है ?

क्रियात्मक

1. छात्र इस कविता को कण्ठस्थ करें और कक्षा में सुनाएँ।
2. अध्यापक छात्रों को राष्ट्रकवि दिनकर की कृतियों का परिचय दें तथा उन्हें पढ़ने की प्रेरणा दें।
3. अध्यापक छात्रों को रामचरितमानस के सुन्दर काण्ड में प्रस्तुत प्रसंग को पढ़ने का परामर्श दें।

पाठ 13 विश्वबन्धुत्व व मानवता

हम सब जानते हैं कि विभिन्न धर्मों के सन्तों, पैगम्बरों व गुरुओं ने अपने–अपने समय में विश्वबन्धुत्व व मानवता को केवल स्थापित ही नहीं किया बल्कि उनका प्रचार भी किया। प्रत्येक सन्त ने अपनी–अपनी वाणी में इसकी अनिवार्यता पर भी बल दिया। विष्ण शर्मा द्वारा रचित पंचतन्त्र में कहा गया है–

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम् ।

उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।

अर्थात् यह अपना है, यह पराया है, ऐसी गणना तो छोटे दिलवाले लोग या संकीर्णहृदय वाले करते हैं, विशाल हृदय वाले लोगों के लिए तो सारी पृथ्वी ही परिवार है।

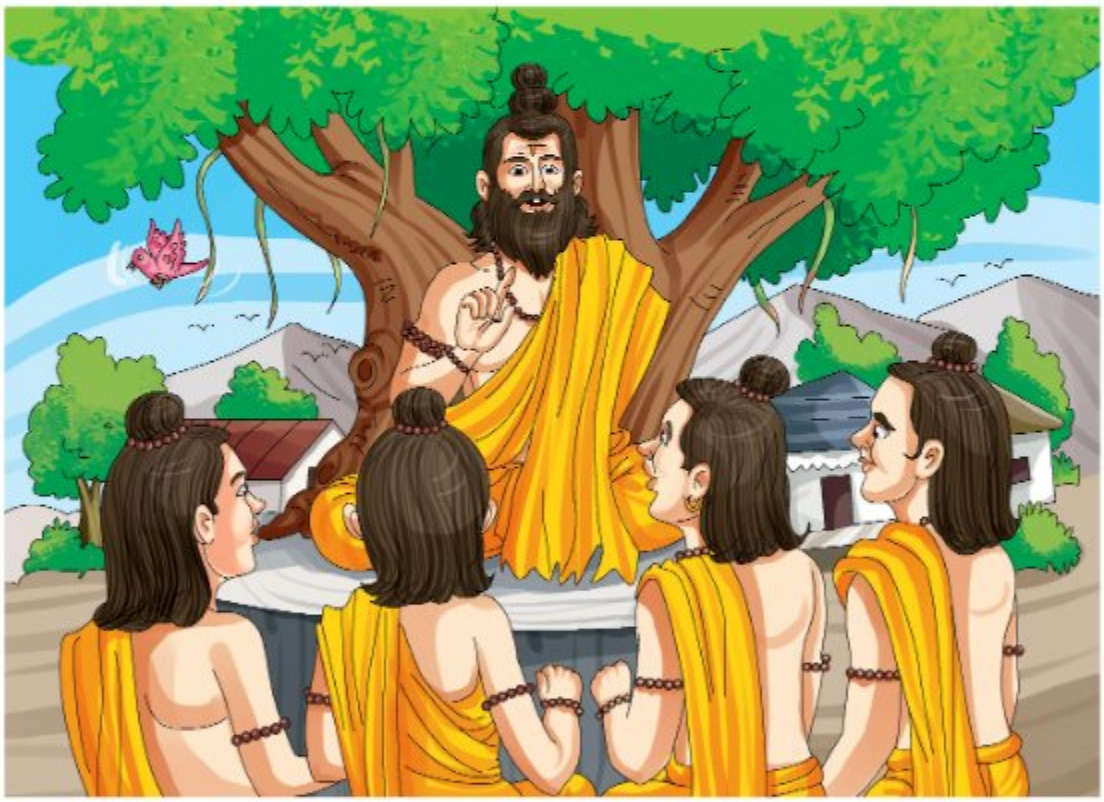

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने इसी भावना को इस प्रकार व्यक्त किया है–

हम स्वदेश पर प्यार करें तो गर्व धरा पर ।

देश अन्ततः खर्व, सर्व है विश्व चराचर ।।

जैन मत के महान् सन्त आचार्य भद्रबाहु के शब्द हैं– एक्का मणुस्सजाई अर्थात् समग्र मानव जाति एक है।

स्वामी रामतीर्थ के ये शब्द भी इसी ओर संकेत करते हैं–''विशाल विश्व मेरा घर है और उपकार करना मेरा धर्म है''। गुरु ग्रन्थ साहिब का भी यही उपदेश है कि–

अव्वल अल्लाह नूर उपाया, कुदरत दे सब बन्दे।

इक नूर तों सब जग उपजया, कौण भले कौण मन्दे ।।

अर्थात् इस जगत में एक ही परमात्मा है व सभी जन उस परमात्मा के ही बन्दे अर्थात् व्यक्ति हैं। सभी एक समान हैं, कोई भला या मन्दा अर्थात् बुरा नहीं है। तुलसीदास को पूरा विश्व ही सियाराममय लगने लगता है। वे कहते हैं–

सियाराममय सब जग जानी, करहुँ प्रणाम जोरि जुग पानी।।

बांग्ला कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है–

घरे–घरे मोर घर आछे, देशे–देशे मोर देश आछे ।।

अर्थात् प्रत्येक घर में मेरा घर है और प्रत्येक देश मेरा ही देश है। अंग्रेज कवि टामस पेन ने भी अपनी पुस्तक 'द राइट ऑफ मैन' में यही बात कही है–

विश्व मेरा देश है और भलाई करना मेरा धर्म।

उर्दू कवि अल्ताफ हुसैन 'हाली' मानवता के गुण को देवत्व से भी ऊँचा मानते हैं। उनका कथन है–

फरिश्ते से बेहतर है इन्सान बनना, मगर इसमें पड़ती है मेहनत जियादा।

महर्षि अरविन्द मानते थे कि मानवता के लिए आवश्यक है– स्वभाव में शक्ति, मन में शान्ति और ह्रदय में प्रेम। विनायक दामोदर सावरकर के अनुसार 'मनुष्यता ही ऊँची देश भक्ति है।'

सूफी सन्त ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, निजामुद्दीन औलिया तथा अमीर खुसरो आदि मानवीय गुणों के ही उपासक थे, वे मानव–मानव में कोई अन्तर नहीं मानते थे। वे मानव मात्र से प्रेम और सहानुभूति के पक्षधर थे।

महर्षि वेदव्यास ने भी महाभारत में इसी भावना को व्यक्त करते हुए कहा हैं कि–

नहि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किंचित् ।

अर्थात् मानवता से बढ़कर और कुछ भी श्रेष्ठ नहीं है। इस प्रकार सभी धर्म मानवता और विश्वबन्धुत्व की बात करते हैं। सत्य, अहिंसा,परोपकार, बन्धुत्व तथा दया आदि ऐसे मानवमूल्य हैं, जिन्हें सभी धर्म एक जैसी आस्था के साथ स्वीकार करते हैं। यदि उपर्युक्त सभी धर्मों के अनुयायी भी इस भावना को अपनाकर सभी पैगम्बरों, गुरुओं व अवतारों का तथा सभी धार्मिक– ग्रन्थों का सम्मान–सत्कार करें तो विश्वबन्धुत्व की भावना स्वतः विकसित होगी तथा हर मानव के ये उद्‌गार होंगे–

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ।।

अर्थात् दुनिया के सभी प्राणी सुखी हों, सभी नीरोग हों, सभी का कल्याण हो और किसी–को कोई भी दुःख न हो।

जिस प्रकार दर्पण चाहे छोटा हो या बड़ा, हमें हमारी सूरत तो दिखा ही देता है, ठीक उसी प्रकार ऊपर वर्णित परमार्थ पर आधारित नैतिक मूल्य चाहे वे किसी सन्त– महापुरुष ने कहे हों या किसी धार्मिक ग्रन्थ में वर्णित हुए हों, हमे सचेत करते हुए मानव–मूल्यों को ही जीवन में अपनाने की प्रेरणा देते हैं।

फरवरी सन् 2012 में अहमदाबाद (गुजरात) में ब्रह्मकुमारी संस्था के 75 वर्ष–पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 'अमृत–महोत्सव' का आयोजन किया गया। जनसमूह को सम्बोधित करते हुए तत्कालीन मुख्यमन्त्री ने कहा था कि– विश्व एक परिवार है और हम एक ही ईश्वर की सन्तान हैं। यह भारतीय संस्कृति की विरासत 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना का परिचायक है। इस सूत्र को हम अपने जीवन में उतारकर ही सभी समस्याओं से मुक्त हो सकते हैं। इन मानवीय मूल्यों को मनसा, वाचा, कर्मणा यदि व्यवहार में लाने का प्रयास किया जाए तो विश्व का एक परिवार के रूप में परिणत होना सहज हो जाएगा। कवि की उक्ति भी इसी बात को प्रमाणित करती है–

आओ इस जग की व्यथा, मिल जुलकर बाँट लें।

विश्व, परिवार में तब परिणत स्वयं हो जाएगा।।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. पंचतन्त्र के लेखक कौन हैं ?
2. राष्ट्रकवि किसे कहा जाता है ?
3. किन्हीं दो सूफी सन्तो के नाम बताओ ?
4. ब्रह्मकुमारी संस्था द्वारा 'अमृत–महोत्सव' का आयोजन कहाँ किया गया ?
5. गुरुग्रन्थ साहब में विश्वबन्धुत्व के बारे में क्या कहा गया है ?

भावात्मक प्रश्न

1. वसुधैव कुटुम्बकम् का भावार्थ बताइए।
2. स्वामी रामतीर्थ के विचार स्पष्ट करें।
3. रवीन्द्रनाथ टैगोर ने विश्वबन्धुत्व की भावना कैसे प्रकट की ?
4. श्री गुरुग्रन्थ साहिब में विश्वबन्धुत्व के विषय में क्या कहा है ?
5. विश्व एक परिवार कैसे बन सकता है ?

क्रियात्मक

1. अध्यापक छात्रों को विश्वबन्धुत्व का सन्देश देने वाली कम से कम पाँच अन्य सूक्तियाँ लिखने को कहेगा।
2. अध्यापक छात्रों को पुस्तकालय से पुस्तकें लेकर विश्वबन्धुत्व के बारे में पढ़ने की प्रेरणा देगा।

पाठ 14

युवा क्रान्तिकारी

अशफाक उल्ला खाँ

भारत देश की मिट्टी में न जाने ऐसी क्या अद्भुत शक्ति है कि यहाँ के धरती पुत्र हँसते–हँसते देश के लिए कुर्बानी देने को तैयार रहते हैं। इतिहास साक्षी है कि इस देश के मिट्टी के लालों ने देश को गुलामी के बन्धनों से मुक्त कराने के लिए अपना जीवन माँ भारती को समर्पित कर दिया।

अशफाक उल्ला खाँ ने प0 रामप्रसाद बिस्मिल के साथ मिलकर सैकड़ों बार अंग्रेज हुकूमत के कलेजे दहलाए थे। दोनों मित्र उर्दू के शायर थे। स्वतन्त्रता प्राप्ति में दोनों देशभक्तों का त्याग एवं बलिदान युवा पीढ़ी के लिए धार्मिक एकता एवं साम्प्रदायिक सौहर्द की अनोखी मिसाल है। विचित्र विडम्बना है कि दोनों को एक ही दिन एवं एक ही समय पर अलग–2 जेलों में फाँसी दी गई।

अशफाक का जन्म 22 अक्टूबर, सन् 1900 को उत्तर प्रदेश में शाहजहाँपुर में हुआ। उनके पिता पठान शाफिक उल्लाह खाँ और उनकी माँ का नाम मजहूद–उन–निसा था। उनके पिता पुलिस विभाग में कार्यरत थे। अशफाक उनके चार पुत्रों में सबसे छोटे थे।

सन् 1920 में अशफाक ने बिस्मिल से मिलने का प्रयास किया परन्तु सफल नहीं हुए। 1922 में असहयोग आन्दोलन के समय अशफाक उल्लाह एक सार्वजनिक सभा में प0 रामप्रसाद बिस्मिल से मिले और स्वयं को उनके मित्र के एक छोटे भाई के रूप में पेश किया।

पं0 रामप्रसाद बिस्मिल आर्य समाज के सक्रिय सदस्य थे। लेकिन उन दोनों में कोई पूर्वाग्रह नहीं था। दोनों का एक ही उद्देश्य था "भारत माता की आजादी"गाँधी जी द्वारा असहयोग आन्दोलन वापिस लेने से निराश हुए अशफाक ने क्रान्तिकारियों में शामिल होने का निश्चय किया क्योंकि क्रान्तिकारियों का मत था कि अहिंसा के द्वारा आजादी प्राप्त नहीं का जा सकती। अतः वे हथियारों के बल पर अंग्रेजों में दहशत पैदा करना चाहते थे।

अपने आन्दोलन को बढ़ावा देने के लिए क्रान्तिकारियों ने 8 अगस्त, 1925 को शाहजहाँपुर में एक सभा का आयोजन किया। विचार–विमर्श के उपरान्त 9 अगस्त, 1925 को 8 डाउन सहारनपुर–लखनऊ यात्री गाड़ी में सरकारी राजकोष को अशफाक उल्लाह खाँ और प0 रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में जिन 8 अन्य क्रान्तिकारियों ने लूटा था, वे थे– राजेन्द्र लाहिड़ी, सचिन्द्रनाथ बख्शी, चन्द्रशेरवर आजाद, केशव चक्रवर्ती, बनवारीलाल, मुकुन्दीलाल, मन्मथनाथ गुप्त और मुरारीलाल।

क्रान्तिकारियों के साहस से घबराए हुए वायसराय ने स्काटलैण्ड यार्ड पुलिस को जाँच के आदेश दिये। गुप्तचर विभाग ने एक महीने में गिरफ्तारी का फैसला किया। 26 सितम्बर, 1925 को प0 रामप्रसाद बिस्मिल सहित अनेक क्रान्तिकारियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। लेकिन अशफाक लापता थे। अशफाक ने उन दिनों बिहार और बनारस में 10 महीने तक इंजीनियरिंग कम्पनी में काम किया। वह विदेश जाने और स्वतन्त्रता संग्राम में मदद के लिए लाला हरदयाल से मिलना चाहते थे। विदेश में जाने की योजना बनाने के लिए दिल्ली चले गए परन्तु दिल्ली में उनके पठान मित्र ने उनके साथ विश्वासघात किया और वे गिरफ्तार कर लिए गए।

अंग्रजों ने अशफाक और बिस्मिल में वैमनस्य पैदा करने का प्रयत्न किया। तत्कालीन पुलिस अधीक्षक ने दोनों को सरकारी गवाह बनाने एवं हिन्दू धर्म के खिलाफ भड़काने की कोशिश की परन्तु अशफाक ने पुलिस अधीक्षक तसददुक हुसैन को मुंहतोड़ जबाब देते हुए कहा– खान साहिब मैं प0 रामप्रसाद बिस्मिल को आपसे ज्यादा जानता हूँ फिर भी आप सही कह रहे हैं तो 'हिन्दू भारत' ज्यादा अच्छा है उस 'ब्रिटिश भारत' से जिसकी आप नौकर की तरह सेवा कर रहे हैं।

अशफाक उल्ला खाँ को फैजाबाद जेल में हिरासत में भेज दिया गया। उनके खिलाफ दायर किये मामले को समाप्त करने के लिए एक वरिष्ठ अधिवक्ता श्री हजेला ने बहुत कोशिश की लेकिन अशफाक के जीवन को नहीं बचा सके। जेल में रहते हुए भी अशफाक प्रतिदिन पाँच बार नमाज पढ़ते थे।

काकोरी, सजा के मामले में पं. रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र लाहिड़ी, और ठाकुर रोशन सिंह को फाँसी की सजा दी गई जब कि 16 अन्यों को चार–चार साल के कठोर कारावास की सजा दी गई।

एक प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार फाँसी से चार दिन पूर्व दो अंग्रेज अधिकारियों ने अशफाक उल्ला खाँन को देखा तो वे अपनी नमाज पढ रहे थे। उनमें से एक ने कहा– "मैं देखना चाहता हूँ कि इसमें कितनी आस्था बची रहती है जब हम इस चूहे को लटका देंगे"। लेकिन अशफाक हमेशा की तरह अपनी प्रार्थना में मशगूल रहे और वे दोनों बड़–बड़ाते हुए चले गए।

अन्ततः सोमवार 19 दिसम्बर, 1927 को अशफाक उल्ला खाँ को फाँसी के तख्ते पर लाया गया। उनकी बेड़ियाँ खोली गईं। उन्होंने फाँसी की रस्सी को इन शब्दों के साथ चूमा "किसी आदमी की हत्या से मेरे हाथ गन्दे नहीं हैं– मेरे खिलाफ तय किए गए आरोप नंगे एवं झूठे हैं। अल्लाह मुझे न्याय देंगे"।

फाँसी का फंदा उनके गले में डाला गया और आजादी के आन्दोलन का एक चमकता हुआ सितारा आकाश में विलीन हो गया।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. अशफाक उल्ला खाँ का जन्म कब और कहाँ हुआ ?
2. अशफाक के माता एवं पिता का नाम बताओ ।
3. अशफाक उल्ला खाँ का क्रान्तिकारियों में शामिल होने का क्या कारण था ?
4. क्रान्तिकारियों ने अपने आन्दोलन को बढ़ावा देने के लिए सभा का आयोजन कब और कहाँ किया ?
5. सरकारी राजकोष की लूट के आरोप में फाँसी की सजा किन्हें और कब हुई ?

भावात्मक प्रश्न

1. अशफाक उल्ला खाँ दिल्ली किस उद्देश्य से गए ?
2. (पुलिस अधीक्षक) तसद्दुक हुसैन ने दोनों क्रान्तिकारियों में वैमनस्य पैदा करने की क्या चाल चली?
3. जेल में अशफाक की दिनचर्या का वर्णन कीजिए ।
4. फाँसी की रस्सी को चूमते हुए अशफाक ने क्या कहा ?
5. अशफाक उल्ला खाँ की फाँसी के दिन ही और किस क्रान्तिकारी को फाँसी दी गई ?

क्रियात्मक

1. अशफाक उल्ला खाँ के अन्य क्रान्तिकारी साथियों के विषय में अध्यापक छात्रों को जानकारी दें।
2. छात्र स्वतन्त्रता प्राप्ति से सम्बन्धित वीरांगनाओं की जीवनियों के विषय में ज्ञान प्राप्त करें।

भारत–गीत

यह भारत भूमि हमारी।
है तीन लोक से न्यारी।।
है हिमगिरि गौरव दाता। मलयानिल चवँर हिलाता।
घन मुक्तमाल पहिनाता। है जलधि चूम पग जाता।
जग ने आरती उतारी।।
है यहीं ज्योति वह फूटी। जिससे अँधियारी टूटी।
है यहीं मिली वह बूटी। जिससे जग जड़ता छूटी।
मानव रुचि गयी सँवारी।।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' रचनावली : खण्ड–2

पाठ 15

प्रेरक कहानी

बुद्धिमान् केंकड़ा

एक समय की बात है एक तालाब के किनारे एक सारस रहता था। तालाब में बहुत सारी मछलियाँ थीं। सारस प्रतिदिन भर पेट मछलियाँ खाता था। ऐसे कई साल बीत गए। सारस बूढ़ा हो गया। अब वह आसानी से मछलियाँ नहीं पकड़ सकता था। जो एकाध मछली उसके हाथ लगती, उससे उसकी भूख नहीं मिटती थी। कभी–कभी वह एक भी मछली नहीं पकड़ पाता था। वह चिन्तित रहने लगा कि यदि इसी तरह चलता रहा तो वह जल्दी ही भूखा मर जाएगा।

उसने एक उपाय सोचा। वह तालाब के किनारे उदास सा मुँह बनाकर खड़ा हो गया। मछलियाँ उसके पास से गुजर जाती लेकिन वह उन्हें न पकड़ता। तालाब की मछलियाँ, मेंढ़क और केंकड़े सोचने लगे कि सारस को क्या हुआ है और वह इतना दुखी क्यों दिख रहा है? एक बड़े केंकड़े ने उसके पास जाकर पूछा, "कहो काका, आज गुमसुम क्यों बैठे हो ? मछली–वछली नहीं पकड़ोगे"? सारस ने कहा, "क्या करूं भतीजे? बात ही कुछ ऐसी है।

मैंने जीवन भर इस तालाब की मछलियाँ खायी हैं। अब समय बदल रहा है। यह सोच कर दुःख होता है कि अब जल्दी ही बेचारी सारी मछलियाँ मर जाएगी और मैं बिना भोजन भूखा मर जाऊँगा।" केंकड़े ने पूछा, "क्यों काका, मछलियाँ क्यों मर जाएँगी?" सारस ने कहा, "मैंने लोगों को कहते सुना है कि वे इस तालाब को मिट्टी से भर देंगे और उस पर खेती करेंगे। अगर उन्होंने ऐसा किया तो एक भी मछली जिन्दा नहीं बचेगी।"

जब मछलियों, केंकड़ों और मेंढकों ने सारस की बात सुनी तो वे सब डर गए। वे सब मिलकर सारस के पास गए और कहने लगे, "काका, यह तो आपने बहुत बुरी खबर सुनाई। अब इस मुसीबत से बचने का उपाय भी आपको ही बताना होगा।" सारस ने कहा, "मै केवल एक पक्षी हूँ , फिर भी शायद मै तुम लोगो की थोड़ी–बहुत सहायता कर सकूं। थोड़ी दूरी पर एक बहुत बड़ा और गहरा तालाब है। उसको ये लोग आसानी से पाट नहीं सकते। अगर तुम चाहो तो मै तुम लोगों को वहां ले चलूँ।"

मछलियों ने कहा, "काका, आपके सिवाय हमारा और कौन है? हमें उसी तालाब में ले चलिए।" सारस ने कहा, "तुम सबको एक साथ ले जाना तो कठिन होगा। लेकिन मै पूरा प्रयास करूँगा।" मछलियों में झगड़ा होने लगा। हर एक मछली चाहती थी कि सबसे पहले वह जाए। सारस ने कहा, " तुम सब धीरज रखो। मैं दो–चार को ही अपनी चोंच में लेकर उड़ सकता हूँ। तुम झगड़ा मत करो। मैं बारी–बारी से सबको वहाँ पहुँचा दूंगा। लेकिन अब मै बूढ़ा हो गया हूँ जल्दी थक जाता हूँ। एक बार वहाँ तक उड़ने के बाद मुझे थोड़ा आराम करना होगा।"

जल्दी ही सारस अपनी पहली यात्रा पर चल पड़ा। वह कुछ मछलियों को चोंच में दबाकर उड़ा। पर किसी दूसरे तालाब में जाने के बजाय वह उन्हें एक चट्टान पर ले गया। वहाँ उन मछलियों को मार–मार कर चट कर गया। उसके बाद वह फिर वापस तालाब पर पहुँचा। कुछ मछलियाँ चोंच में दबाई और उड़ चला। भरपेट मछलियाँ खाकर सारस को नींद आ गई और वह सो गया। जब वह सो कर उठा तो उसको फिर भूख लग गई। वह तालाब पर पहुँचा और कुछ और मछलियों को ले आया। उनको भी वह उसी चट्टान पर ले गया और मारकर खा गया। इस तरह जब उसको भूख लगती तो कुछ मछलियों को दूसरे तालाब पर पहुंचाने के बहाने लाता और मारकर खा जाता।

अब तालाब में थोड़ी मछलियाँ बची थी। उनमें एक केंकड़ा भी था। उसने भी सारस से कहा, "मेरी भी जान बचाइये काका। मुझको भी यहाँ से ले चलिए।" सारस ने मन ही मन सोचा, "चलो एक दिन केंकड़े का ही भोजन किया जाए। मुँह का स्वाद भी बदलेगा।" फिर वह बोला, "हाँ, हाँ, दोस्त, मै यहाँ तुम्हारी सहायता करने के लिए ही तो खड़ा हूँ। चलो, मैं तुम्हें दूसरे तालाब में ले चलता हूँ।" वह केंकड़े को लेकर उड़ा। रास्ते में केंकड़े को कही भी पानी दिखाई नहीं दिया। इतने में उसने देखा कि सारस आगे जाने कि बजाय नीचे उतर रहा है।

केंकड़े ने पूछा, "काका, यहाँ तो कोई तालाब नहीं है। फिर आप यहाँ क्यों उतर रहे है? वह तालाब कहाँ है जहाँ आप मछलियों को ले गए थे?" सारस ने हंस कर कहा, "नीचे जो चट्टान देखते हो न, मैं तुमको वहीं ले जा रहा हूँ। वही सारी मछलियो को भी ले गया था।" केंकड़े को चट्टान साफ दिखाई दे रही थी। उस पर मछलियों की ढेरों हड्डियाँ बिखरी पड़ी थीं। वह समझ गया कि सारस मछलियों को मारकर खा गया है और अब उसको भी मारने के इरादे से लाया है। केंकड़े ने एक उपाय सोचा। अपने संड़ासी जैसे पैरो के चंगुल में उसने सारस की पतली गर्दन दबा दी। सारस ने अपने पंख फड़फड़ाए और गर्दन छुड़ाने का प्रयास किया लेकिन केंकड़े ने उसे नहीं छोड़ा। वह अपने नुकीले पैरों को उसकी गर्दन में चुभाता ही गया, यहाँ तक कि सारस की गर्दन कट गई और वह जमीन पर गिर पड़ा।

सारस के कटे सिर को घसीटता हुआ केंकड़ा उस तालाब तक पहुँचा जहाँ वह रहता था। मछलियों ने केकड़े को देखा तो पूछने लगी, "क्या बात है भैया, तुम लौट क्यों आए? सारस काका कहाँ गए?" केंकड़ा मुस्कराकर बोला, "काका तो नही आए। हाँ उनका सिर आया है।" उसने मछलियों को सारस का सिर दिखाकर बताया कि वह किस तरह उनको धोखा दे रहा था। अब उसने सारस को मार दिया है। धोखेबाज सारस से छुटकारा पाकर मछलियाँ बहुत खुश हुई और केंकड़े को बहुत–बहुत धन्यवाद दिया।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. मछलियाँ कहाँ रहती हैं ?
2. सारस प्रतिदिन क्या पकड़ कर खाता था ?
3. कुछ वर्षों बाद सारस मछलियों को क्यों नहीं पकड़ पा रहा था ?
4. मछलियाँ और केंकड़े सारस को क्या कहकर सम्बोधित करते थे ?

भावात्मक प्रश्न

1. सारस ने अपनी उदासी का क्या कारण बताया ?
2. सारस ने किस प्रकार कपट कार्य किया ?
3. केंकड़े ने किस प्रकार बुद्धिमत्ता दिखाई ?
4. आपके विचार में अधिक बुद्धिमान् कौन है ? सारस या केंकड़ा और कैसे ?

क्रियात्मक

कपट का उपचार बुद्धिमत्ता से ही सम्भव है' इस उक्ति पर आधारित कोई और कहानी लिखिए।

दिव्य दृष्टि

किसी में हास मिला हँसता।
किसी में दुख–दल दिखलाया।
किसी में विरह बिलखता था।
किसी में पीड़ा को पाया।।
किसी में खिँची हुई देखी।
कलह की बड़ी कुटिल रेखा।
आँसुओं की बूँदों को जब।
दृष्टि को दिव्य बना देखा।।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' रचनावली : खण्ड–2

पाठ 16

पर्यावरण व स्वास्थ्य

छोटी–छोटी बातें

मानव भगवान् की सर्वश्रेष्ठ रचना है किन्तु मानव को मानव बनाने के लिए वेद आदेश है – 'मनुर्भव'। इस आदेश का पालन करना मनुष्य का नैतिक कर्त्तव्य है। मनुष्य बनने के साथ ही कार्य करने के साधनरूप इस शरीर को स्वच्छ व स्वस्थ रखना भी हमारा दायित्व है। यथा कवि शिरोमणि कालिदास कहते हैं– 'शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्' अर्थात् अपने कर्त्तव्य कर्मों (धर्मों) को करने का शरीर सर्वप्रथम साधन है। स्वस्थ शरीर के बिना कोई भी कार्य पूर्ण नहीं किया जा सकता। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिए स्वच्छता को जीवन में अपनाना आवश्यक है। किसको, किससे स्वच्छ किया जाए, मनु ने इसकी बड़ी सुन्दर परिभाषा दी है –

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति, मनः सत्येन शुध्यति।

विद्यातपोभ्यां भूतात्मा, बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति ।।

पानी से शरीर शुद्ध होता है, मन सत्य से शुद्ध होता है, विद्या और तप से जीवात्मा शुद्ध होता है और बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है। इस प्रकार सबकी स्वच्छता का अलग–अलग साधन है। हम यहाँ दैनिक जीवन में काम में आने वाली स्वच्छता सम्बन्धी व अन्य बातों पर विचार करेंगे।

- अभिभावकों को बचपन से ही बच्चों में सफाई की आदत डाल देनी चाहिए। अपने कपड़े साफ रखना, नाखून काटकर रखना, अपना सब सामान सुव्यवस्थित रखना आदि।
- भोजन करने से पहले व बाद में, शौच जाने के बाद, मिट्टी व गोबर में काम करने के बाद साबुन से हाथ होने चाहिए। यात्रा करके आने के बाद भी हाथ धोने चाहिए। इससे संक्रामक रोगों से बचा जा सकता है। इसके महत्त्व को ध्यान में रखते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 5 अक्टूबर को 'हैण्ड वाश डे' मनाया जाता है।
- हाथों को धोने के छः चरण होते हैं– हाथों को गीला कर साबुन लगाना, अन्दर की तरफ से दोनों हाथों को मसलना, पीछे से मसलना, अगुलियों के मध्य भाग को साफ करना, नाखूनों को साफ करना तथा सबके बाद पानी से हाथों को धो डालना । इससे हाथों और नाखूनों में सूक्ष्म जीवाणु (रोगाणुओं के वाहक) जमा नहीं हो पाते।
- बर्तनों को राख या साबुन से साफ करना चाहिए।
- घर की सफाई रखें, घर के आस–पास गन्दगी का ढेर न होने दें, किसी भी जगह खड़ा हुआ गन्दा या साफ पानी मच्छरों के पनपने में सहायक होता है, अतः पानी खड़ा न रहने दें। खड़ा होने की स्थिति में उस पर काला तेल या मिट्टी के तेल की बूँदें डाल दें, इससे मच्छरों का लारवा नष्ट हो जाता है और मच्छरों के पनपने की प्रक्रिया बाधित होती है।

- घर के मुख्यद्वार पर पाय दान रखें, इससे बाहर से आने वाली गन्दगी अन्दर नहीं आ पाती।
- गन्दे पानी के निकासी की नालियाँ ऊपर से बन्द होनी चाहिये ।
- सार्वजनिक स्थलों पर कूड़ा न फैलायें, कूड़ा फैलाने वालों को रोकें। कभी–कभी स्वयं–सेवक के रूप में अन्य लोगों को भी साथ लेकर इनकी सफाई करें, सफाई के साथ–साथ इससे जन चेतना जागृत होगी।
- आवारा पशुओं को सरकार द्वारा बनाये गये आश्रय स्थलों पर भेजने में सहयोग करें ताकि उन द्वारा किये गये मल–मूत्र से वातावरण दूषित न हो।

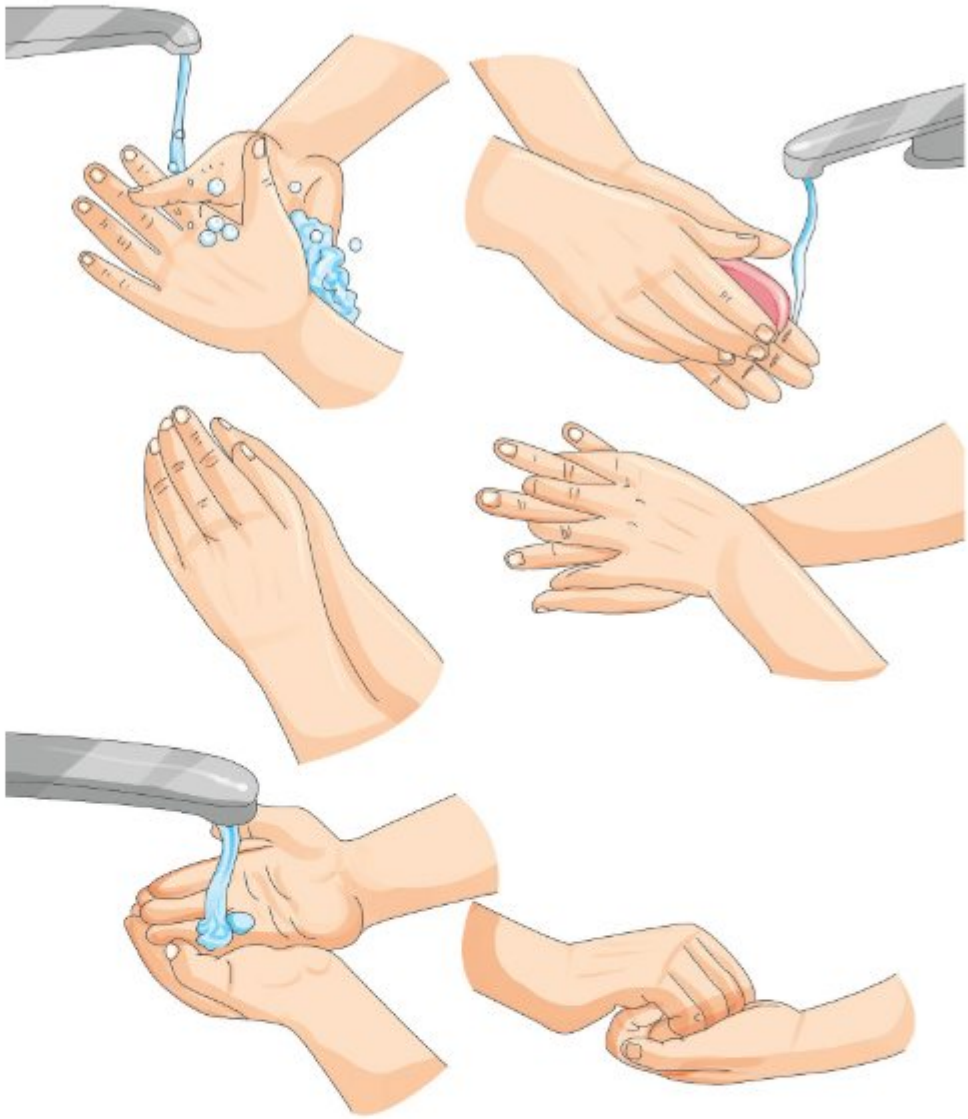

- पशु शालाओं को साफ रखना आवश्यक है क्योंकि पशुओं में होने वाली बीमारियाँ मनुष्यों को प्रभावित करती हैं।
- भोजन खाने या बनाने से पहले साबुन से हाथ साफ कर लेने चाहिए।
- फलों और सब्जियों को धोकर प्रयोग करें, यदि सम्भव हो तो फलों को 7–8 घण्टे ठण्डे पानी में डालकर रखें। इससे उनपर छिड़के हुए कीटनाशकों का प्रभाव बहुत कम हो जाता है।
- सड़क किनारे बिना ढ़के रखे हुए फलों की चाट, भोजन, गन्ने का रस, बहुत समय से रखा हुआ फलों का रस, बासी भोजन, चावल आदि के प्रयोग से बचना चाहिए, इनसे संक्रामक बीमारियाँ फैलने का खतरा अधिक मात्रा में होता है।
- वर्षा के दिनों में पानी उबालकर छानकर या फिल्टर किया हुआ पीना स्वास्थ्य के लिए हितकर होता है। अन्यथा इन दिनों में उल्टी–दस्त, हैजा, बुखार, टाईफाइड बुखार, आँखों की बीमारियाँ हो जाती हैं।
- उल्टी–दस्त होने पर नमक–चीनी के घोलवाला उबला हुआ पानी पीयें अथवा O.R.S. का घोल बनाकर पीयें। शरीर में पानी की मात्रा कम न होने दें।

- भोज्य पदार्थों की सफाई बीमारियों से बचने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। दूध या दूध से बने पदार्थ, माँस, अण्डे, मछली, उबले हुए चावल आदि की बहुत सफाई रखनी चाहिए क्योंकि इनमें सूक्ष्म जीवाणु बहुत तेजी से पनपते हैं। जैसे दही जमाने के लिए हम दूध में थोड़ा सा दही मिला देते हैं, जो सारे दूध को 3 घण्टे में ही दही का रूप दे देता है। दूध को दही में बदलने वाले जीवाणु को Lacpobacillus कहते हैं। जिस गति से यह जीवाणु दूध को संक्रमित करता है उसी गति से अन्य हानिकारक सूक्ष्म जीवाणु भोजन को संक्रमित करते हैं। अतः संक्रमित भोजन को खाने से बचें।
- मटके या पानी के बरतन से पानी पीने के लिए डण्डी वाली लुटिया का प्रयोग करें। किसी को गिलास से पानी देते समय पानी में उँगली का स्पर्श न होने दें।
- धुले हुए व साफ कपड़े पहनने से त्वचा के रोगों से बचा जा सकता है।
- हर रोज स्नान करना चाहिए। गर्मी के मौसम में आवश्यकता पड़ने पर एक से अधिक बार भी नहाया जा सकता है, जिससे पसीने की दुर्गन्ध दूर हो जाती है और रोम छिद्र खुल जाते हैं।
- मिरगी का दौरा पड़ने पर मुँह में पानी नहीं डालना चाहिए। सिर ऊँचा रखकर उसके हाथ पैर मसल कर उसे होश में लाने का प्रयत्न करना चाहिए।
- हीमोग्लोबिन (रक्ताल्पता) कम होने पर आयरन युक्त भोजन पालक, बथुआ, गाजर आदि हरी सब्जियाँ, सेब, अनार, आँवला आदि फलों का प्रयोग करना चाहिए, इनके अभाव में आयरन की गोलियाँ खानी चाहिए।
- खुले में शौच के लिए न जायें। घर में शौचालय का निर्माण करवायें, शौचालय की सफाई का पूर्णरूप से ध्यान रखें।

हमारी वर्तमान सरकार प्राथमिकता के स्तर पर स्वच्छता पर कार्य कर रही है। अतः सरकार ने 'स्वच्छ भारत अभियान' को बड़े उच्च स्तर पर प्रारम्भ किया है। इस अभियान के साथ सरकार ने समाज के अपने–अपने क्षेत्र में प्रतिष्ठित नौ लोगों और संस्थाओं को जोड़ा। इसे गति देने के लिए इन पर जिम्मेवारी डाली गई कि ये सभी अलग–अलग 9–9 लोगों या संस्थाओं को उत्तरदायित्व सौंपे। इस प्रकार अब तक इस अभियान के साथ लाखों लोग व संस्थायें जुड़ चुकी हैं। आप भी इस अभियान के साथ जुड़िये तथा भारत को स्वच्छ बनाइये।

इसी अभियान के अन्तर्गत सरकार ने शौचालय निर्माण पर विशेष ध्यान दिया है। प्राइवेट कम्पनियों, पब्लिक सैक्टर अण्डर टेकिंग (P.S.U.S.) को भी सरकार ने इस कार्य में मदद करने का आह्वान किया है। गैर सरकारी संस्थाओं (N.G.O.) को भी इस अभियान के साथ जोड़ने की वर्तमान सरकार की इच्छा है। इस विषय में 2 अक्टूबर, 2019 तक भारत सरकार का लक्ष्य इस प्रकार है –

1. खुले में शौच जाना बन्द करना।
2. मैला ढोने की प्रथा को बन्द करना।
3. मैला खुली नालियों में बहाना बन्द करना।
4. नागारिकों में इन सबके प्रति जागृति लाना।
5. कूड़ा–करकट डालने का सिस्टम (तन्त्र) बनाना।

इन सबके प्रचार–प्रसार के लिए सरकार ने 'स्वच्छ भारत' साइट भी बनाई हुइ है। क्यों न इस महान यज्ञ में अपनी–अपनी कुछ सेवाएं देकर आहुति डालें।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. मन और बुद्धि किससे शुद्ध होते है ?
2. भोजन से पहले हाथ धोने क्यों आवश्यक हैं ?
3. फलों व सब्जियों से कीटनाशकों का प्रभाव कैसे कम किया जा सकता है ?

भावात्मक प्रश्न

1. मिरगी का दौरा पड़ने पर किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
2. स्वच्छ भारत अभियान प्रारम्भ करते समय सरकार ने किन लोगों को इसे आगे बढ़ाने की जिम्मेवारी सौंपी।

क्रियात्मक

1. अध्यापक अपने विद्यालय प्रांगण व विद्यालय के सामने सफाई करवाकर सफाई अभियान का सन्देश दें।
2. गाँव या नगर में गन्दे स्थानों की पहचान कर उनकी सफाई के लिए कोई दिन निर्धारित करें।

शिक्षा

क्या मैं हूँ यह सुमन नहीं बतलाता फिरता,
उस की सुन्दर सुरभि उसे है मान दिलाती।
ऐसे ही है मनुज गुणों से पूजा जाता,
लम्बी–लम्बी बात नहीं है बात बनाती।

चाह

बना रहे पानी मोती–सा,
चमक–दमक प्यारी दिखलाओ।
अपने मुँह की लाली रखकर,
लाल! लाल जैसा बन जाओ।

अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' रचनावली : खण्ड–9

पाठ 17

उल्लेखनीय

डॉ ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

अबुल पाकिर जैनुल्लाब्दीन अब्दुल कलाम अथवा ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को मिसाइल मैन के नाम से जाना जाता है। उनका जन्म 15 अक्तूबर 1931 को तमिलनाडु में धनुष्कोटि गाँव में एक मध्यम वर्गीय मुस्लिम परिवार में हुआ। इनके पिता मछुआरों को नाव किराये पर दिया करते थे। पाँच वर्ष की अवस्था में रामेश्वरम के पंचायत प्राथमिक विद्यालय में उनको दाखिल कराया गया। सन् 1958 में इन्होंने मद्रास इंस्टीच्यूट आफ टेक्नोलाजी में अंतरिक्ष विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। स्नातक होने के बाद उन्होंने हावरक्राफ्ट परियोजना पर काम करने के लिए भारतीय रक्षा अनुसन्धान एवं विकास संस्थान में प्रवेश किया।

सन् 1962 में वे भारतीय रक्षा अनुन्धान संगठन में आये। यहाँ उन्होंने सफलतापूर्वक कई उपग्रह प्रक्षेपण कर परियोजनाओं में अपनी भूमिका निभाई। परियोजना निदेशक के रूप में भारत के पहले स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान एस.एल.वी. 3 का निर्माण कर रोहिणी उपग्रह सफलतापूर्वक अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किया। उन्होंने कहा भी है कि 'बिना प्रयास के कभी सफलता नहीं मिलती और सच्चा प्रयास कभी असफल नहीं होता।' उनकी सच्ची लगन और प्रयासों से ही सब कुछ सफल रहा। सन् 1992 से 1999 तक रक्षामन्त्री के विज्ञान सलाहकार तथा सुरक्षा शोध और विकास विभाग के सचिव रहे। उन्होंने रणनीतिक प्रक्षेपास्त्र प्रणाली का उपयोग आग्नेयास्त्रों के रूप में किया। इसी प्रकार पोखरण में दूसरी बार परमाणु परीक्षण भी परमाणु ऊर्जा के साथ मिलाकर किया। इस तरह भारत ने परमाणु हथियार के निर्माण की क्षमता प्राप्त करने में सफलता अर्जित की। डा0 कलाम ने भारत के विकास स्तर को 2020 तक विज्ञान के क्षेत्र में अत्याधुनिक करने के लिए एक विशिष्ट सोच प्रदान की। वे भारत सरकार के मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार थे।

उन्होंने अपना पूरा ध्यान 'गाईडेड मिसाइल' के विकास पर केन्द्रित किया। जमीन से जमीन पर मार करने वाली मिसाइल प्रणाली को *पृथ्वी* और टेक्निकल कोर व्हीकल मिसाइल को *त्रिशूल* नाम दिया गया। जमीन से हवा में मार करने वाली रक्षा प्रणाली को *आकाश* और टैंकरोधी मिसाइल परियोजना को *नाग* नाम दिया गया। डॉ अब्दुल कलाम ने अपने मन में संजोए रेक्स के बहुप्रतीक्षित सपने को *अग्नि* नाम दिया। अग्नि मिसाइल और पृथ्वी मिसाइल के सफल परीक्षण का श्रेय उन्हीं को जाता है। सन् 1998 में भारत ने पोखरण में अपना दूसरा सफल परमाणु परीक्षण किया। उनके अथक प्रयासों से भारत परमाणु शक्ति सम्पन्न देशों की सूची में आ गया है। 'भारत रत्न' से सम्मानित अब्दुल कलाम देश के सच्चे सपूत थे। 27 जुलाई 2015 को यह महान आत्मा इस संसार से विदा हो गई।

डॉ0 अब्दुल कलाम राजनीतिक क्षेत्र के व्यक्ति नहीं थे लेकिन राष्ट्रवादी सोच और भारत की कल्याण सम्बन्धी नीतियों के कारण उन्हें राजनीतिक दृष्टि से सम्पन्न माना गया।

इसी चिन्तन के अधार पर डॉ0 अब्दुल कलाम भारत के ग्यारहवें राष्ट्रपति निर्वाचित हुए थे। वे जुलाई 2002 से जुलाई 2007 तक इस पद पर रहे। श्री कलाम बातचीत में बड़े विनोदप्रिय स्वभाव के थे। वे अपनी बात को बड़ी सरलता से रखते थे। इनके व्यवहार में हास्यमिश्रित वाक्यों का प्रयोग हुआ करता था। डॉ कलाम सभी प्रसंगों को मानवीयता की कसौटी पर रखते थे। डॉ0 कलाम के लिए जाति, धर्म, वर्ग, समुदाय जैसा कोई भेद महत्त्व नहीं रखता था। वे सर्वधर्म समभाव के प्रतीक थे।

डा0 अब्दुल कलाम ने अपनी कलम से अपने व्यक्तिगत एवं व्यावसायिक संघर्षों के वर्णन के साथ अग्नि, पृथ्वी, आकाश, त्रिशूल एवं नाग मिसाइलों के विकास की कहानी भी लिखी है। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत को मिसाइल सम्पन्न देश के रूप में जगह दिलाई। भारत को एक महाशक्ति के रूप में देखने का उनका सपना अवश्य पूरा होगा।

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. डा0 अब्दुल कलाम का जन्म कब और कहाँ हुआ?
2. डा0 अब्दुल कलाम को किस नाम से जाना जाता है ?
3. दूसरा परमाणु परीक्षण कब और कहाँ हुआ?
4. टैंक रोधी मिसाइल को क्या नाम दिया गया ?

भावात्मक प्रश्न

1. वैज्ञानिक देश को नई दिशा कैसे देते हैं ?
2. मिसाइल मैन से आप क्या समझते है ?
3. डा0 अब्दुल कलाम ने कौन सा सपना देखा ?

क्रियात्मक

1. अपने देश के महान वैज्ञानिकों की सूची बनाइए एवं उनके कार्यों के विषय में जानें।

पाठ 18 राष्ट्रभक्ति

जिसको न निजगौरव तथा निज देश का अभिमान है।

वह नर नहीं पशु निरा है और मृतक समान है ।।

सम्पूर्ण संसार में ऐसा एक भी प्राणी नहीं है जो अपने देश व मातृभूमि को शीश न झुकाता हो। मातृभूमि वह पवित्र भूमि होती है जहाँ मनुष्य जन्म लेता है। उसकी गोद में खेलकर मातृभूमि में उसका इतना अनुराग हो जाता है कि वह अपने जीवन पर्यन्त उसे याद करता रहता है। अपनी जन्मभूमि के नाम भर से ही वह आनन्दित व रोमांचित हो उठता है। मातृभूमि की धूल को भी मनुष्य स्वर्ग से बढ़कर मानने लगता है। रामायण में रावण की लंका को जीत लेने के बाद श्री राम की रुचि उस स्वर्णमयी नगरी में रहने की नहीं होती । वे अपनी जन्म भूमि अयोध्या में लौटना चाहते हैं। वे लक्ष्मण को कहते हैं–

अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते ।

जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।।

अर्थात् हे लक्ष्मण मुझे यह स्वर्णमयी लंका बिल्कुल अच्छी नहीं लगती क्योंकि माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होती है। हमारे ऋषि मुनियों ने अनादिकाल से मातृभूमि एवं माता की महिमा कही है तथा इस जगत् में पांच जकारों को दुर्लभ माना है वे हैं– जननी, जन्मभूमि, जाह्नवी (गंगा), जनार्दन और जनक–

जननी जन्मभूमिश्च जाह्नवी च जनार्दनः।

पंचमो जनकश्चैव जकाराः पंच दुर्लभाः।।

वेदों में विशेषरूप से अथर्ववेद के भूमिसूक्त में मातृभूमि की विशेषता के अनेक मन्त्र हैं।

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।

अर्थात् भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूँ। यही भावना हर देश के हर प्राणी के अन्तर्मन में विद्यमान रहती है।

इसी भावना के साथ हम अपनी मातृभूमि के प्रति समर्पित रहते हैं क्योंकि यही भूमि हमें सम्पूर्ण समृद्धि प्रदान करती है। बंकिम चन्द्र चटर्जी ने वन्देमातरम् गीत में यही आराधना की है–

वन्दे मातरम् ।।

सुजलां सुफलां मलयजशीतलां

शस्यश्यामलां मातरम् ।।

इतनी सारी विशेषताएं जब जन्मभूमि में होती हैं तो प्रत्येक मानव का सर्वश्रेष्ठ धर्म अपनी जन्मभूमि की भक्ति अर्थात् देशभक्ति होता है। जिस व्यक्ति में यह देशभक्ति की भावना नहीं होती उसका जीवन नीरस होता है। राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त ने कहा है–

मरा नहीं जो भावों से

बहती जिसमें रसधार नहीं ।

हृदय नहीं वह पत्थर है

जिसको स्वदेश से प्यार नहीं।

अंग्रेज कवि बायरन ने तो यह कहा कि जो व्यक्ति अपने देश से प्यार नहीं करता वह किसी अन्य से भी प्यार नहीं कर सकता है।

अंग्रेज विद्वान् डेनियल वैबस्टर ने भी जीवन का एकमात्र उद्देश्य समग्र राष्ट्रभक्ति को ही माना है।

वीर भोग्या वसुन्धरा– यह पृथ्वी हमेशा ही वीरों के द्वारा भोगी जाती है। वीर पुरुष ही अपने देश की रक्षा करने में समर्थ होते हैं। कहा भी गया है–

स्वर्णपुष्पितां पृथिवीं चिन्वन्ति पुरुषास्त्रयः ।

शूरश्च कृतविद्यश्च यश्च जानाति सेवितुम् ।।

अर्थात् शूरवीर, विद्वान् व सेवा को ही कर्म मानने वाले यही तीन व्यक्ति पृथ्वी का भोग कर सकते हैं और उनमें भी शूरवीर को प्रथम स्थान दिया गया है। यह देशभक्ति ही वह शक्ति है जो वीरों को दीपशिखा पर भ्रमर की तरह अपने आप को न्यौछावर करने की प्रेरणा देती है। यही वह प्रेरणा है जिससे प्रेरित होकर महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी, महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस, वीर सावरकर, लाला लाजपतराय, बालगंगाधर तिलक, भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, उधम सिंह, अशफाक उल्ला खाँ, रामप्रसाद बिस्मिल, महारानी लक्ष्मीबाई, मंगलपाण्डेय आदि वीरों ने स्वतन्त्रता यज्ञ में अपने भौतिक सुखों को तिलांजलि देते हुए अपने प्राणों की आहुति दी थी। आजादी के बाद भी हुए युद्धों में अब्दुल हमीद, कैप्टन विक्रम बत्रा, कैप्टन मनोज पाण्डेय आदि अनेक सपूतों के बलिदान को कौन भुला सकता है। यह उन वीरों का ही बलिदान है कि कोई भी शत्रु आज तक हमारी मातृभूमि की ओर आँख

उठाकर नहीं देख सकता है। इस भारतभूमि को विधाता की अनुपम रचना माना गया है।

इयम् भूमिरेका महादर्शभूमिः

विधातुः कृतिः काऽपि चित्राऽद्वितीया।

इस पद्य में भारत भूमि की प्रशंसा की गई है तथा इसे शत्रुओं के लिए अगम्य माना गया है। इस धरा पर खिलने वाला फूल भी अपनी यही इच्छा प्रकट करता है कि वह भी अपने देश के काम आ सके, ऐसा इस भारत भूमि पर ही सम्भव है। माखन लाल चतुर्वेदी जी की पुष्प की अभिलाषा कविता की पंक्तियाँ दर्शनीय हैं–

मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक।

मातृ भूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएँ वीर अनेक।।

यही भाव हर भारतीय के मन में अपनी मातृभूमि के प्रति विद्यमान रहते हैं। भामाशाह का अपनी जन्मभूमि के लिए सर्वस्व त्याग कर महाराणा प्रताप को प्रदान कर देना देश भक्ति का अनूठा उदाहरण है। रामावतार त्यागी की कविता की पंक्तियाँ हमें देश के लिए मर मिटने की प्रेरणा देती हैं।

तन समर्पित मन समर्पित और यह जीवन समर्पित

चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

अथर्ववेद में भी मातृभूमि के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर करने की प्रार्थना की गई है। "वयं तुभ्यं बलिहतं स्याम" – भारत भूमि का गौरवमय इतिहास व इसकी संस्कृति सम्पूर्ण विश्व के लिए गुरु के समान मार्गदर्शक रही है। सर्वधर्म सद्भाव व सहिष्णुता का गुण भारत को विश्व से अलग श्रेणी में रखता है और इसी का प्रभाव है कि शत्रु भी यहाँ आकर शत्रुता छोड़कर सुख पूर्वक निवास करते हैं। कहा गया है

अस्तीदृशं किमपि भारत भूमि भागे,

तत्त्वं यतो विहितभूरितरापराधाः ।

वैदेशिका अपि रिपुत्वमपास्य भक्त्या,

लब्ध्वाश्रयं ससुखमत्र पुनर्न यान्ति ।।

अर्थात् अनेक प्रकार के अपराध करने वाले भी जब भारत में आ जाते हैं तब वे शत्रुता भूलकर यहीं बस जाते हैं और लौटना नहीं चाहते। भारत–भूमि की पावन धरा का इससे उत्तम प्रमाण नहीं मिल सकता कि देवता भी मनुष्य रूप में यहाँ निवास करने की इच्छा करते रहते हैं। विष्णुपुराण में कहा गया है–

गायन्ति देवाः किल गीतकानि, धन्यास्तु ते भारत भूमिभागे।

स्वर्गापवर्गास्पदहेतु भूते, भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात् ।।

अर्थात् देवता भी यह गीत गाते हैं कि वे लोग धन्य हैं जो स्वर्ग व मोक्ष देनेवाली भारतभूमि पर उत्पन्न हुए हैं। देवता भी स्वर्ग लोक में पुण्य समाप्त होने पर भारत भूमि पर जन्म लेते हैं। जिस मातृभूमि पर जन्म लेने की स्पृहा देवगण भी करते हैं तो हम धन्य हैं जो ऐसी धरा पर उत्पन हुए हैं। इस धरा की रक्षा करना हमारा परम कर्तव्य है। हर देशवासी अपने आप को देश पर न्यौछावर कर गौरवान्वित महसूस करता है। वह किसी भी खतरे से नहीं घबराता। देशभक्त व क्रान्तिकारी अशफाक उल्ला खाँ की पंक्तियाँ किसी भी देशवासी में जोश भर देती हैं–

सही जज्बाते हुर्रियत कहीं मेटे से मिटते हैं

अबस है धमकिया दारोरसन की और जिदां की।।

आजादी के जो जज्बात हैं वो फाँसी के तख्त और जेल की निरर्थक धमकियों से नहीं मिट सकते इसलिए देश हित को ही हमारा प्रथम धर्म मानकर हमें देश हित के लिए कार्य करना चाहिए। अगर देश समृद्ध, विकसित व सुरक्षित होगा तभी हम सबकी समृद्धि व उन्नति होगी।।

शब्दार्थ

जज्बात	–	भावना
हुर्रियत	–	स्वतन्त्रता
अबस	–	व्यर्थ
जिदां	–	जेल, कारागार

अभ्यास

ज्ञानात्मक प्रश्न

1. इस पाठ में किस–किस को स्वर्ग से भी बढ़कर माना गया है ?
2. जकार से शुरू होने वाले कौन से 5 शब्दों को दुर्लभ माना गया है ?
3. अथर्ववेद में किस सूक्ति के माध्यम से भूमि को माता का दर्जा दिया गया है ?
4. अंग्रेज कवि बायरन देश के प्रति क्या विचार रखते थे ?
5. पृथिवी का भोग करने में कौन–2 समर्थ होते है ?
6. भारत भूमि का विदेशियों पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

भावात्मक प्रश्न

1. श्री रामचन्द्र को सोने की लंका अच्छी क्यों नहीं लगी होगी ?
2. स्वदेश से प्रेम न करने वाले ह्रदय की पत्थर से तुलना क्यों की गई है।
3. देवता भी इस भारतभूमि पर रहने की स्पृहा क्यों करते हैं ?
4. भारत भूमि में विशेष तत्त्व क्या है ?
5. क्रान्तिकारी अशफाक उल्ला खाँ ने देश भक्ति के बारे में क्या कहा है ?

क्रियात्मक

1. विद्यालय में देशभक्ति दर्शाने वाली बार्डर, देशप्रेमी आदि हिन्दी फिल्में छात्रों को दिखलाई जाएँ।
2. आजादी के क्रान्तिकारियों की जीवनी को पुस्तकालय में पढ़ने के लिए प्रेरित करें।
3. देशभक्ति को प्रदर्शित करने वाले उद्घोषों का संकलन व नारा देने वाले महापुरुषों का नाम लिखें।।

पाठ 19 बुद्धि स्थिर एवं अच्छी रहे

व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन ।
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ।। 2/41

व्यवसायात्मिका, बुद्धिः एका, इह, कुरुनन्दन ।
बहुशाखाः, हि, अनन्ताः, च, बुद्धयः, अव्यवसायिनाम् ।।

समबुद्धि होती है अर्जुन! वही,
निश्चय हो जिस बुद्धि का एक ही ।
न होता स्थिर निश्चय जिस बुद्धि का,
सकामी पुरुष वो रहे भटकता ।।

भावार्थ –

बुद्धि बिगड़े नहीं, अच्छी रहे–यह बहुत आवश्यक है। साथ ही यह भी कि बुद्धि का निश्चय स्थिर हो। निश्चय बदलते रहने की आदत किसी भी क्षेत्र में अच्छे परिणाम नहीं देती। सार यह है कि बौद्धिक अस्थिरता अर्थात् निर्णय में हलचल की स्थिति न हो।

श्रीमद्भगवद्गीता में बुद्धि को बहुत आदर दिया गया है। आवश्यक भी है। किसी भी गाड़ी में ड्राइवर अथवा रथ में सारथि की भूमिका का सम्मान तो है ही। बुद्धि जीवन रूपी रथ का सारथि है। बुद्धि अच्छी है तो जीवन अच्छे मार्ग की ओर चलेगा। बुद्धि बिगड़ी तो सब कुछ बिगड़ा । बुद्धिः नाशात् प्रणश्यति (गीता 2/63)

यह भी ध्यान रहे कि बुद्धि कोई ठोस अंग नही, निर्णयात्मिका शक्ति है। बुद्धि का कार्य निर्णय करना है। यह बात स्पष्ट है ही कि जैसा बुद्धि का निर्णय होता है, जीवन की गाड़ी उधर ही चल देती है। निर्णय के पीछे संगति का भी प्रभाव रहता है। अच्छी संगति तो बुद्धि अच्छाई के निर्णय पर रहेगी। अच्छी पढ़ाई करने वाले बच्चों की संगति 'अच्छी पढ़ाई अच्छे जीवन' की ओर बुद्धि को प्रेरित करेगी। इसके विपरीत यदि संगति ऐसे बच्चों की हो गई, जिनका ध्यान पढ़ाई में कम एवं बुरी आदतों में अधिक है तो बुद्धि पर ऐसा बुरा प्रभाव पड़ता है जिससे सारे जीवन का खेल बिगड़ जाता है। बच्चो! यह भी ध्यान रखों कि सीढ़ी के द्वारा छत पर चढ़ने में कितनी मेहनत लगती है, लेकिन गिरने में एक क्षण। चढ़ने और गिरने के पीछे बुद्धि के निर्णय की बहुत बड़ी भूमिका है तथा बुद्धि के निर्णय में संगति की। अच्छी

संगति मिली, अच्छा निर्णय हुआ, अच्छे जीवन की ओर आगे बढ़ने का क्रम प्रारम्भ होगा लेकिन दुर्भाग्य से बुरी संगति मिल गई, बुद्धि बिगड़ गई, तब गिरने में जरा भी देर नहीं लगेगी।

बुद्धि अच्छी और स्थिर रहे–वस्तुतः यह जीवन की प्रथम आवश्यकता है। बुद्धि नाम निर्णय करने का है। अच्छे और स्थिर निर्णय पर ही जीवन की स्थिरता निर्भर करती है।

अस्थिर निश्चय वाले प्रायः भ्रमित, अस्थिर और विचलित रहते हैं। आजकल वैसे तो प्रत्येक क्षेत्र में ही यह समस्या रहती है, लेकिन बचपन यौवन में यह दुविधा कहीं अधिक देखी जा रही है। यह करें या वह–इसी भ्रमजाल में बुद्धि अटकी रहती है। या फिर ऐसा भी होता किसी की देखा–देखी अथवा किसी के जरा सा कहने पर या फिर वैसे ही उस निर्णय को बदल दिया । बदला नहीं भी तो यही सोचते रहे कि ऐसा कर लेते तो शायद अधिक अच्छा होता।

बहुत से बच्चों को देखा जाता है–किसी एक निर्णय पर स्थिर न रह पाने के कारण आगे नहीं बढ़ पाते। दुविधा या भ्रम की स्थिति न तो बौद्धिक विकास होने देती है, न मानसिक स्थिरता बनने देती है और न ही किसी एक विषय या क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त करने देती है। एक जगह कुछ खुदाई की.....फिर वहाँ से छोड़कर दूसरी....तीसरी.....चौथी जगह–सोचो, पानी कहीं से भी मिलेगा क्या ? है–एक निर्णय किया,

बुद्धि जागरूक रहे, पहले से ही सही गलत का विवेक कर ले, तत्पश्चात् किये गये निर्णय में स्थिरता, परिणाम स्वतः दिखाई देंगे। अस्थिर, भ्रमित, दुविधाग्रस्त स्थिति बिल्कुल नहीं। बच्चो ! आओ, गीताजी के इस श्लोक को अपने जीवन में लाकर देखें! बुद्धि निर्णयों के जंजाल में उलझकर न रह जाये। बहुत बड़ी क्षमता बुद्धि के रूप में हमारे पास है, उसका सदुपयोग करें। निर्णय विचारपूर्वक करें, अच्छा करें, पक्का करें ।

यह दृढ़ विश्वास रखो कि आप में बहुत बड़ी क्षमतायें है, जीवन के किसी भी क्षेत्र में आप आगे बढ़ सकते हैं। जो जो भी जिस जिस क्षेत्र में ऊँचाईयों तक पहुँचे उन्हें अपने जीवन का आदर्श बनाओ और विचार करो कि वे कैसे इस सफलता को प्राप्त कर पाये ? आप पाओगे कि उनके जीवन में निर्णय दृढ़ रहा होगा, बुद्धि भ्रमित और अस्थिर नहीं होगी ।

अभ्यास

आओ विचार करें –

1. इस श्लोक का भावार्थ क्या है ?
2. बुद्धि क्या है और उसका कार्य क्या है ?
3. बुद्धि किस भ्रमजाल में उलझी रहती है ?
4. बुद्धि के निर्णय में संगति का क्या प्रभाव रहता है ?
5. बुद्धि के भ्रम में उलझे रहने का परिणाम क्या होता है !
6. बुद्धि का सदुपयोग किस में है ?
7. कैसा आदर्श और विश्वास लेकर आगे बढ़ना उचित है ?

आत्म निरीक्षण

1. मैं प्रातः काल समय पर उठा।
2. मैंने प्रातः काल उठने के बाद धरती माँ को प्रणाम किया।
3. मैंने मन्त्र उच्चारण कर अपने हाथों के दर्शन किया।
4. मैंने पृथ्वी पर चरण रखने से पूर्व धरती माँ का स्पर्श किया।
5. मैं बिस्तर त्याग कर शौच आदि से निवृत्त हुआ।
6. साबुन से हाथ धोकर मैंने दातुन/मंजन किया थोड़ा व्यायाम तथा योग आसन किये।
7. स्नान करते हुए प्रत्येक अंग को मैंने स्वच्छ किया।
8. मैंने स्वच्छ वस्त्र पहनकर पूजा कक्ष में जाकर पूजा की।
9. मैंने प्रसन्नचित होकर अल्पाहार किया।
10. मैंने जूते साफ किए, गणवेश पहनी और विद्यालय के लिए प्रस्थान किया।
11. मैं विद्यालय समय पर पहुँच गया।
12. मैंने विद्यालय की प्रार्थना सभा में आँखें बन्द कर प्रार्थना की।
13. मैंने कक्षा में आकर एकाग्रचित होकर पढ़ाई की।
14. जो चीज समझ में नहीं आ रही अध्यापक जी से पूछी और समझी।
15. मैं अर्ध अवकाश में कड़ी धूप में नहीं खेला।
16. मैं पूर्ण अवकाश के पश्चात् अपनी सभी पुस्तकों को सम्भाल कर घर के लिए चला।

17. मैंने घर आकर सभी वस्तुएँ, कपड़े, जूता व बस्ता यथा स्थान रखे और वस्त्र बदले।

18. साबुन से हाथ धोकर मैं भोजन के लिए भोजन स्थान पर बैठ गया।

19. मैंने भोजन मन्त्र बोलकर भोजन किया।

20. मैंने प्रभु का धन्यवाद किया कि उसने यह स्वादिष्ट भोजन खाने को दिया है। भोजन उपरान्त साबुन से हाथ धोए।

21. मैंने थोड़ी देर विश्राम किया उसके पश्चात् गृह कार्य पूर्ण किया।

22. मैं बाहर खेलने के लिए गया। खेलने और मनोरंजन क्रियाओं में मन से भाग लिया।

23. मैंने निश्चित समय पर रात्रि में भोजन किया।

24. मैंने माँ–बाप की स्वीकृति लेकर अच्छे चुने हुए दूरदर्शन चैनल कार्यक्रमों को उचित दूरी से देखा।

25. रात्रि की पढाई की और फिर वस्त्र बदलकर शयन कक्ष में चला गया।

26. मैंने सोने से पूर्व आत्मनिरीक्षण किया।

27. मैंने रात्रि को आंखे बन्द कर 5 मिनट के लिए अपने आप से प्रश्न किया कि आज का दिन मेरा कैसा रहा?

28. मैंने प्रभु से प्रार्थना की मेरा अगला दिन सही बीते/ठीक से बीते।

29. दिन में कोई सेवा कार्य किया?

30. अच्छा गीत कहानी स्मरण की?